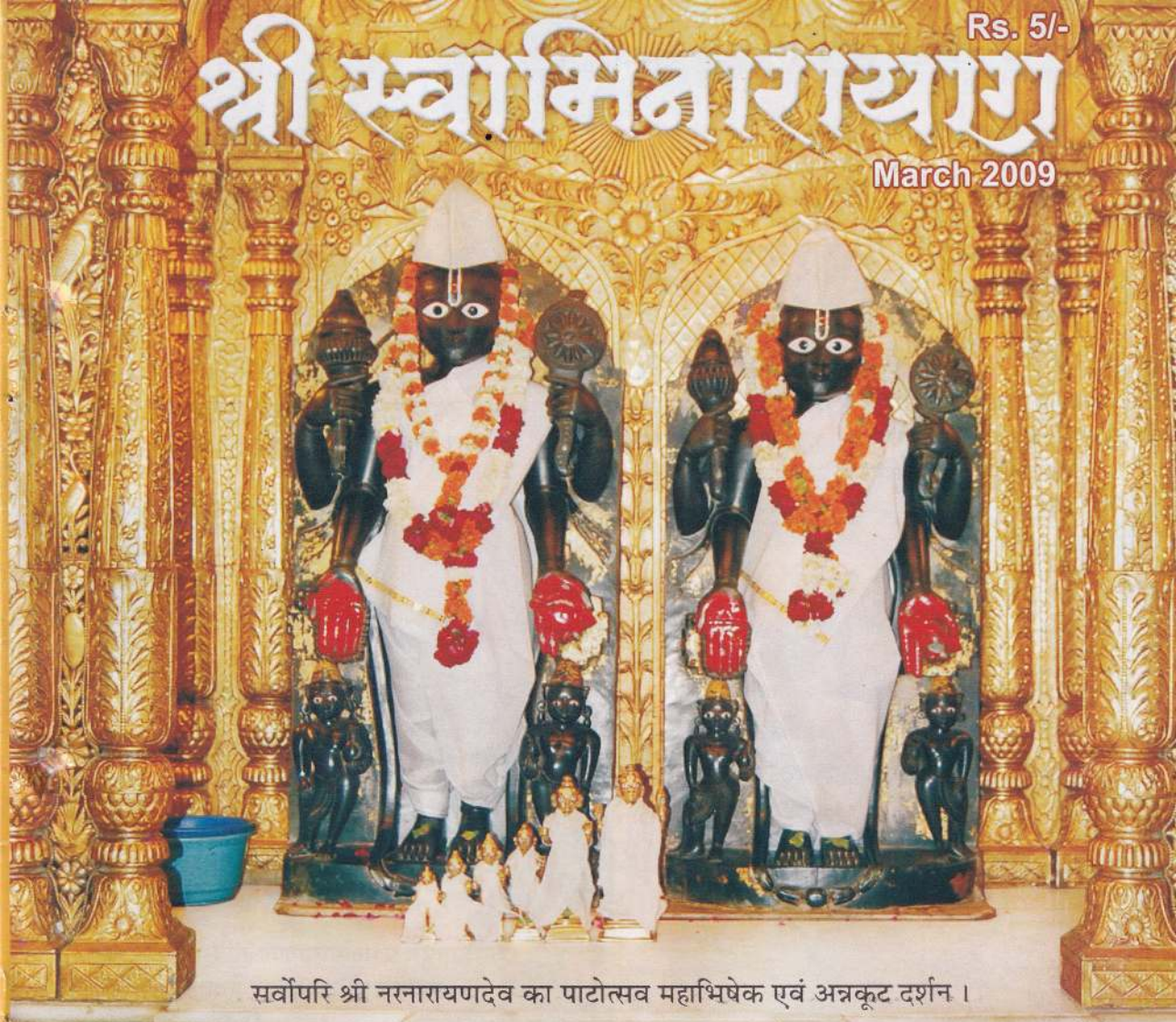
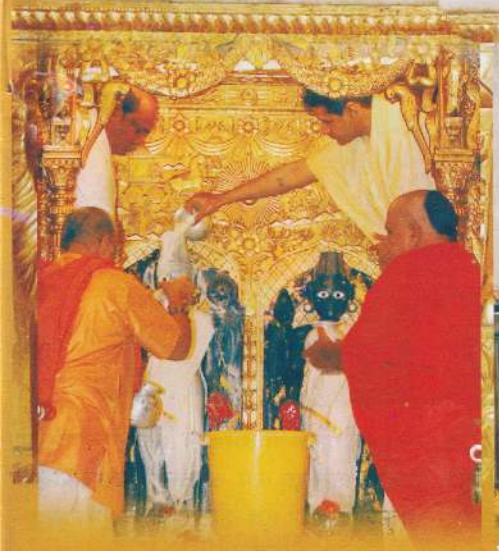
Rs. 5/-

श्री स्वामिनारायण

March 2009



सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव महाभिषेक एवं अन्नकूट दर्शन ।





प्रकाशकः श्री स्वामिनारायण मंदिर, अमदावाद-१



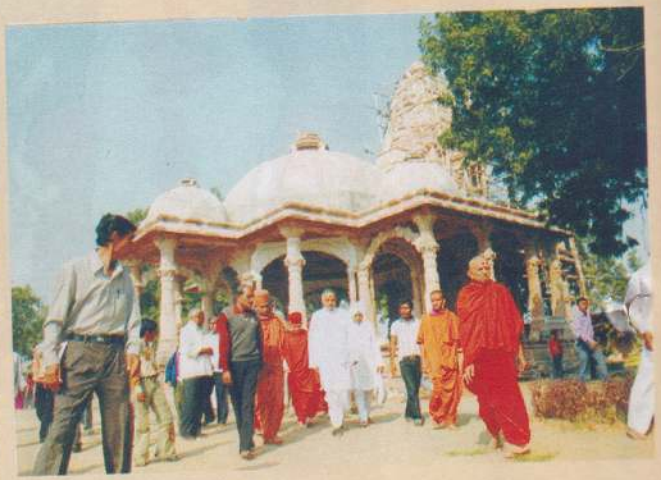
नूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में वसंत पंचमी के उत्सव प्रसंग पर संत हरिभक्तों के साथ रंगोत्सव मनाते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं पू. लालजी महाराजश्री ।



भुज श्री स्वामिनारायण मंदिर में कच्छ के संत हरिभक्तों के साथ रंगोत्सव मनाते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री ।



श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



जमीयतपुरा प्रभा हनुमानजी मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री का पावन पदार्पण ।



मोखासण गांव के प.भ. सोमाभई पटेल परिवार द्वारा आयोजित पारायण प्रसंग के व्यासपीठ की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा वक्ता संत शा.स्वामी रामकृष्णदासजी एवं कोठारी जे. के. स्वामी ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 2 | अंक : 23 | मार्च-2009

अनुक्रमणिका

१. अस्मदीयम २
२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा ३
३. तप्तमुद्रा का इतिहास तथा महिमा ५
४. आदि आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री ७
५. शिक्षापत्री भाष्य की कथा में बड़े महाराजश्री का अमूल्य उपदेश ८
६. मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा ९
७. सत्संग बालवाटिका १७
८. भक्तिसुधा १९
९. प्रश्न पेटी २२
१०. सत्संग समाचार २३

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्

मार्च महीना अर्थात् आर्थिक स्थिति का अंतिम मास, गणित करने का मास । श्रीहरि के वचनानुसार कहें तो जैसे व्यापारी अपने किये गये व्यापार का हिसाब करता है कि इस वर्ष मेरी इतनी इन्कम हुई तथा इतना माल गया या घाटा हुआ । यदि इन्कम हो तो प्रसन्न होता है, तथा संसार के लोग भी यह मानते हैं कि यह होंशियार व्यापारी है । इसका व्यापार उत्तरोत्तर बढता ही जा रहा है । व्यापारी भी प्रसन्न होता है कि प्रभु की कृपा से मेरा व्यापार अच्छा चल रहा है । इसी तरह यदि घाटा होने लगे तो चिन्ता करने लगता है कि विगत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष घाटा हुआ है । दूसरे लोग भी निंदा करते हैं और स्वयं भी चिंता होती है । नींद नहीं आती - नानाविध मन में विचार आने लगते हैं । बाद में तो ऐसा होने लगता है कि "अब लौंनसानी अब न नसैंहौं । जागे पुनिन डसैंहौं" । अर्थात् अपने व्यापार को बढाने में सारी रात जगनी पड़े तो जागते रहेंगे । जिस तरह संसारी व्यापारी को धन की प्राप्ति के लिये चिंता या हानि हो जाने पर उसकी चिंता, ठीक ऐसे ही भक्त को भी भगवान के प्रति जितनी अधिक भक्ति हो वही इन्कम वृद्धि समनी चाहिये तथा संसार के प्रति हानि समझनी चाहिये । क्योंकि भक्त संसार को भूलकर रात दिन परमात्मा में मन लगा देता है जिससे भक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगती है । इसी तरह संसारी मानव भी अपने संसार के कार्य में तन, मन, धन से किसी कार्य में लग जाता है तो उत्तरोत्तर उसी में उसकी बृद्धि होती है । सत्संगी को भी इसी तरह विचार करना चाहिये कि मेरी भक्ति, सत्संग, सेवा नियम, निश्चय, पक्ष बढा है या घटा है या उतना ही है । यदि बढा हो या मजबूत हो तो ठीक लेकिन उतना का उतना ही हो तो थोड़ा विचार करना चाहिये । जैसे कोई चालांक व्यापारी अपने व्यापार के प्रति रातदिन एक करके अपने व्यापार में वृद्धि कर लेता है ठीक उसी तरह सत्संग में, भक्तिमें तथा समझ में विशेष ध्यान देने का प्रयत्न करना चाहिये । चाहे जितने वर्षो तक सत्संग करते रहिये यदि उस में गति न आवे तो किया हुआ सत्संग व्यर्थ हो जायेगा या निष्फल समझना चाहिये ।

उत्सवों के भगवान अर्थात् अपने महाप्रभु श्री स्वामिनारायण भगवान सर्वावतारी श्रीहरि जो हम सभी के कल्याण के लिये मुक्त परमहंसो के साथ इस लोक में चैत्र शुक्ल-९ के शुभ दिन पधारे थे। परमात्मा के प्रागट्य से सर्वजीव हितावह का कार्य ही नहीं हुआ बल्कि मुक्ति का मार्ग भी खुल गया । उन्हीं महाप्रभु का आगामी रामनवमी के दिन २२८ वर्ष पूर्ण होने पर उसी के निमित्त परंपरागत रामनवमी का उत्सव खूब धूमधाम से मनाया जायेगा । इस कार्यक्रम को श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में बड़ी श्रद्धा के साथ सम्पन्न किया जायेगा, आप सभी इसका लाभ लेने अवश्य पधारेगे । इसके साथ जिस उत्सव को बड़ी अतुरता के साथ मनाने की राह देख रहे हैं वह "धर्मकुल वंदना उत्सव" सन्निकट में आता जा रहा है । उसकी भी तैयारी धूमधाम से चल रही है । इस कार्यक्रम को संपन्न करने के लिये समस्त सत्संग समाज तन, मन, धन से कटिबद्ध हो जायं, क्योंकि ऐसा अवसर बार-बार नहीं मिलता है । इसलिये इस कार्य में सहभागी होकर जीवन को धन्य बना लीजिये ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदास का

जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

फरवरी -२००९



१. कणभा गुरुकुल में पदार्पण ।
सोजा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में दीप प्रागट्य प्रसंग पर पदार्पण ।
गवाडा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२. श्री हिरेन प्रागजीभाई काथरोडिया के यहाँ आफिस के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण ठक्कर बापानगर ।
श्री नाथाभाई छगनभाई केवडिया के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण बापुनगर ।

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर श्रीनगर कलोल पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
ईश्वरपुरा (बदपुरा) गाँव में पदार्पण ।

४. श्री मंगलसिंह बनुभाई, परमार के नूतन मकान में तथा सहजानंद बांच कुं में पदार्पण, खोडियारनगर ।

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री रमणभाई बबलदास गज्जर के जयस्के ग्राफीक्स में पदार्पण बारडोलपुरा ।

६. मोखासण गाँव में श्री सोमाभाई त्रिभोवनदास पटेल की तरफ से पाटोत्सव प्रसंग पर आयोजित पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
भीमपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर के प्रथम पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

७. वासणा अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
मोखासण श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर तथा पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री बंसीलाल गज्जर की तरफ से आयोजित गंगापूजन प्रसंग पर पदार्पण, नारायणघाट मंदिर.

९. श्री चंदूभाई आत्माराम पटेल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, कलोल ।
श्रीजी मोबाईल दुकान के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, कलोल ।

१०. महेसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर आयोजित शोभायात्रा में पदार्पण ।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा यज्ञ एवं पारायण की पूर्णाहुति तथा मूर्ति प्रतिष्ठा स्वयं अपने हाथों से धूमधाम के साथ संपन्न किये ।

१५. श्री डॉ. जी. के. पटेल के यहाँ पदार्पण, मीठाखड़ी ।

१३. राजपुर (त. कड़ी) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्तिप्राण प्रतिष्ठा अपने हाथों से संपन्न किये ।
श्री परेशभाई जीतेन्द्रभाई भट्ट के यहाँ पदार्पण, ओढव ।

१४. नारायणघाट श्री स्वमिनारायण मंदिर पाटोत्सव अभिषेक अपने हाथों से संपन्न किये ।
कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर विजयस्तंभ स्थापना प्रसंग पर पदार्पण ।
नारायणघाट मंदिर प्रासंगिक सभा में पदार्पण ।
रात्रि में - श्री स्वामिनारायण सं.म.वि. जेतलपुरवाड़ी के विद्यार्थी संतो द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम अपनी अध्यक्षता में संपन्न किये, टाउनहोल)

१५. बावला गाँव में श्री जयंतीभाई कानजीभाई के नरनारायण ट्रेडींग कं. में पदार्पण ।
विहार श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री बाबुभाई कशनदास पटेल के यहाँ पदार्पण सायंस सीटी, सोला ।

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर भवपुरा के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री सतीषभाई कनैयालाल शेठ के यहां पदार्पण, इसनपुर ।
१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर बाकरोल मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
१८. शहेरा (पंचमहाल) श्री स्वामिनारायण मंदिर दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर माधवगढ (त. प्रांतीज) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री शरदभाई गोविंदभाई पटेल के यहाँ आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण राजपथ क्लब ।
२०. श्री किल्लोलभाई विनोदभाई शेलत के यहाँ पदार्पण परिमलगार्डन एलिसब्रीज ।
२३. चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
२४. ओला (त. कलोल) गाँव में पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
वडु गाँव में "धर्मकुल वंदना" महोत्सव प्रसंग पर आयोजित सभा प्रसंग पर पदार्पण ।
२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पारायण के प्रारंभ प्रसंग पर पदार्पण, सायंकाल मांडवी (कच्छ) पदार्पण ।
२६. से २७. मांडवी (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर के सार्ध शताब्दी महोत्सव प्रसंग पर आयोजित शोभायात्रा एवं ठाकुरजीके पाटोत्सव को अपने हाथों से धूमधाम के साथ संपन्न किये ।
२८. सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव अभिषेक वेद विधिसे षोडशोपचार पूर्वक अपने हाथों से धूमधाम के साथ संपन्न किये ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया शोभायात्रा प्रसंग पर पदार्पण ।

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के विषय में जो नियमानुसार प्रति वर्ष फरवरी महीने की अंतिम तारीख के बाद प्रकाशित होनेवाले प्रथम अंक में स्पष्ट किया जा रहा है ।

१.	प्रकाशन स्थल	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदावाद-१
२.	प्रकाशन समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
४.	संपादक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव की गादी के अधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१

मै शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य हैं ।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदावाद-१, (प्रकाशक की साईन)

तप्तमुद्रा का इतिहास तथा महिमा

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

चतुर्भुज स्वरूप में भगवान अपने चार हाथ में शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण करते हैं। इन चार मुद्राओं को जब अग्नि में तपाया जाता है तब इन्हें मुद्रा कहते हैं। भक्त जब अपनी दोनों बाहों पर तप्तमुद्रा को धारण करते हैं तो वे शंख, चक्र, गदा, पद्म सदा के लिये अंकित हो जाते हैं। जिस तरह कंठी, तिलक, चन्दन तथा गुरूमंत्र भक्त की पहचान है, उसी तरह "छाप" (तप्तमुद्रा) भक्त की पहचान है।

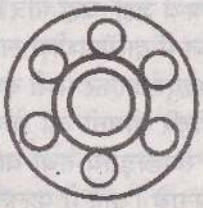


प्रथम तो यह तप्तमुद्रा (चिन्ह) द्वारिका तीर्थ में मिलती थी, जिससे काफी परेशानी उठानी पड़ती थी। कोई गरीब या साधु हो उसे यदि तप्तमुद्रा लेनी होती तो विना पैसे के नही मिलती थी। वर्तमान में श्रीहरि अहमदाबाद, वडताल, छपैया जैसे बड़े तीर्थो का निर्माण कर दिये जिससे ए तप्त मुद्रायें बड़ी सरलता से उपलब्ध हो गई है। अब धन की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। तप्तमुद्रा ग्रहण करने वाला स्वेच्छया जो भेंट देना चाहता है दे सकता है।



द्वारिका में रणछोडरायजी द्वारिकाधीश श्री कृष्ण हैं वैसे ही वडताल में श्री लक्ष्मीनारायणदेव तथा द्वारिकाधीश रणछोड़रायजी के स्वरूप में दर्शन देते हैं। श्रीहरि अपने संबन्धिजनो को नंदराम, गोपाल, मनसाराम इत्यादि अयोध्यावासी को द्वारिका की यात्रा करने के बाद ही अपने पुर जाने की आज्ञा किये थे। श्रीहरिने कहा, उद्धव संप्रदाय के आश्रित लोगों को द्वारिका की यात्रा अवश्य करनी चाहिये। उस द्वारिका में द्वारिका पति श्री कृष्ण का दर्शन करना चाहिये। तथा गोमती में स्नान करना चाहिये, इसके साथ भगवान के चक्रायुद्यो को धारण करना चाहिये।

बाद में सभी ने ऐसा ही किया द्वारिका के गुगली ब्राह्मणो को इच्छानुसार द्रव्यदान करके आदरपूर्वक स्नान किया। तप्तमुद्रा के विषय में यहाँ थोड़ा निर्देश कर रहा हूँ। सच्चिदानंद मुनि उन अयोध्यावासियों के साथ गये थे, उनके पास पैसे नहीं थे। इसलिये द्रव्य अभाव के कारण गोमती में स्नान नहीं कर सके। तीर्थका दर्शन करके स्वामी समाधि में लीन हो गये। अयोध्यावासी स्वामी से छूट गये। स्वामी तीन दिन तक गोमती तट पर उपवास करके रह गये। वहाँ से वे आरावल गाँव में गये। उस गाँव में भी स्वामीने देखा कि वहाँ के लोग द्रव्य के अभाव में तप्तमुद्रा नहीं ले सकते है। तप्तमुद्रा के अधिकारी धन के लोभ से वृद्ध, बालक, स्त्री तथा कितने ब्राह्मणों एवं साधुओं को पीड़ित कर रहे थे। धन के विना किसी को तप्तमुद्रा नहीं देते थे। जिसके पास धन न होता तो उन लोगों को अपमानित किया जाता था। कोई विशेष आग्रह से लेना चाहे तो उसे खूब गरम तप्तमुद्रा लगा दीया जाती थी। इस तरह की निर्दयता तथा द्रव्य की लोलुपता देखकर सच्चिदानंद मुनि कांप उठे थे।



सच्चिदानंद स्वामीने अधिकारियों से निवेदन किया कि कृष्ण भक्तों? आप सभी आज हमें कृष्ण की तप्तमुद्रा से चिन्हित करो। स्वामी को भी धन रहित समझकर भलाबुरा करते हुये अपमानित करके तप्तमुद्रा दिये विना निकाल दिया।

स्वामीने देखा कि यहाँ भगवान के आयुद्यों का व्यवसायी करण हो गया है। वहाँ पर तीन दिन तक उपवास करके शंखोद्धार तीर्थ गये। वहाँ भारी कारण धनाभाव के महाप्रभु श्रीकृष्ण हुआ। द्रव्य का दर्शन नहीं के कारण की लोलुपता भारी भीड़ स्त्री-पुरुषों की रहा था। अत्याचार हो दर्शन करने श्रीकृष्ण के को श्रीहरि की आज्ञा थी। इसलिये स्वामी को अन्तर्भाव में प्रत्यक्ष



दर्शन दिये । विजया रात्रिका चतुर्थ प्रहर था । श्रीकृष्ण भगवान शंख, चक्र का त्याग करके अत्यन्त आनन्द के साथ स्वामी का आलिंगन किये । मुनि के शरीर पर हाथ फेर कर वरदान मांगने को कहे ।

स्वामीने प्रभु से सभी वृत्तान्त बताकर यह कहा कि आपके ऊद्धव संप्रदाय में साधुजनों को आपका दर्शन सरलता से हो ऐसी उपाय कीजिये । श्रीकृष्ण भगवान प्रसन्न होकर कहे कि वडताल में श्री लक्ष्मीनारायणदेव की जो मूर्ति है उसी में मैं विराजमान होकर दर्शन दूंगा । वहाँ द्वारिका की तरह वडताल में श्री लक्ष्मीनारायणदेव के नाम से जो मेरा दर्शन करेगा उसे सर्वमनोरथ की प्राप्ति होगी । आप आज ही जाइये । आपके साथ मैं आ रहा हूँ । श्रीहरि की इच्छा से मुनि तथा अयोध्यावासी द्वादशी के दिन गोमती तट पर एकत्रित हुये । गढपुर वापस आते समय वे जहाँ-जहाँ रात्रि निवास किये वहाँ-वहाँ रात्रि में स्वप्न में द्वारिकाधीश लक्ष्मी के साथ आते दिखाई दिये । गढपुर आकर सभी वृत्तान्त कह सुनाये ।

गढपुर में श्रीहरि गोमती को घेला नदी के किनारे निवास कराये । रणछोड़राय तथा वासुदेव नारायण के निवास स्थान पर गये । बाद में फूलदोलोत्सव के प्रसंग पर श्रीहरि की इच्छा से सभी संतो ने भी लक्ष्मी सहित श्रीकृष्ण प्रभु का दर्शन किया । इसी तरह वडताल निवासी भक्तों को भी अनुभव हुआ ।

जब दयानिधि भगवान द्वारिकाधीश वडताल पधारे उस समय द्वारिका नगरी साक्षात् वडताल में पधार गई । गोमतीजी तालाब के स्म में पधारीं । तीर्थ मंडल भी साथ में पधारे । द्वारिका नाथ श्रीहरि को स्वप्न में कहे कि मैं इस वृत्तालयपुर में आ गया हूँ । इसलिये आप मेरे आयुधों द्वारा अर्थात् शंख, चक्र, गदा, पद्म द्वारा अपने भक्तों को मुद्रा से करें । सहजानंद स्वामी प्रातः उठकर अपने भक्तों को तप्तमुद्रा से अंकित किये । त्यागीजन भी द्वारिकाधीश का दर्शन करके, गोमती में स्नान करके तप्तमुद्रा धारण किये ।

श्रीहरि ने वडताल के धारुतालाब को गोमती नाम दिया । श्रीहरिने यह भी कहा कि सच्चिदानंद स्वामी के साथ गोमती तथा चिन्ह दिये हैं इसलिये ये दोनों एक साथ यहाँ विराजमान रहेंगे । तथा दूसरे स्वस्म से अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव मंदिर में रहेंगे ।

श्रीहरिने वडताल के प्रतिष्ठा की सभा में आश्रितों को आज्ञा किये कि अहमदाबाद तथा वडताल इन दोनो स्थानों में जब आप जायें तो तप्तमुद्रा अवश्य लेना । अहमदाबाद रंगोत्सव में श्रीहरिने आज्ञा की कि द्वारिका से तप्तमुद्रा आई है जो लोग मुद्रा ग्रहण करना चाहे वे धारण कर सकते हैं । रणछोड़जी को लक्ष्मी नारायणदेव के स्थान में स्थापित किये है तथा दूसरे स्वस्म में श्री नरनारायणदेव की मूर्ति के स्म में स्थापित किये है, इस चिन्ह को धारणकरके साबर गंगा में स्नान करना । जो व्यक्ति वडताल सरोवर या श्रीनगर साबर गंगा में स्नान करके तप्तमुद्रा धारण करेगा उसे यमयातना भोगनी नहीं पड़ेगी ।

धर्मकुल वंदना महोत्सव में गाँव गाँव के समस्त हरिभक्तों की सेवा-सहयोग के लिये

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव गादी के सर्व प्रथम आदि आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के २०० वर्ष पूर्ण होने पर जन्म जयंती "धर्मकुल वंदना महोत्सव" आगामी ता. १-६-०९ से ता. ३-६-०९ ज्येष्ठ शुक्ल-९ से ज्येष्ठ शुक्ल-११ तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की अध्यक्षता में तथा समस्त धर्मकुल की उपस्थिति में धूमधाम के साथ मनाया जायेगा ।

जिससे गाँवो में तथा शहरों में रहने वाले समस्त हरिभक्तो को इस "धर्मकुल वंदना" महोत्सव में तन, मन, धन से सेवा करने की अपील की जारही है । इस उपलक्ष्य में आपके गाँव में उत्सव के लाभार्थ यदि कोई संत आवें तो खुले हाथ दान दें । जिससे यह महोत्सव भव्यातिभव्य संकल्प के अनुसार प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के कन्धे के भार को हल्का करके उनके संकल्प तथा प्रेरणा में सहभागी बनें ।

प्रत्येक हरिमंदिर के कोठारीश्री आपके गाँव में संयोगवशात् यदि संतमंडल नहीं पहुंच सके हों तो आप अपने गाँव की तरफ से महोत्सव में अनाज या नगद स्मये एकत्रित करके कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर "धर्मकुल वंदना" की आफिस में जमाकराकर पक्की रसीद प्राप्त करलें ।

आज्ञा से

महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद

आदि आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री

- राजन कनैयालाल भावसार (विसनगर)

आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री पुरुषोत्तम भगवान के चार अवतारों में से एक अनिरुद्ध भगवान के अवतार थे ।

वि.सं. १८८२ में श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति बनने के बाद प्रथम फूलदोलोत्सव मनाया गया था । इसलिये यह उत्सव धूमधाम से मनाया जाय बहुत ही स्वाभाविक है । किशोरवय के अपने गुरु ऐसे आदि आचार्य को तथा श्रीहरि को प्रसन्न करने के लिये आनंदानंद स्वामी तथा को. हयग्रीवानंद स्वामी भी फूलदोलोत्सव की तैयारी में लग गये । वे अनेक पाकशालाओं में नाना व्यंजनों को तैयार करवाये । श्रीहरि इस क्रिया से प्रसन्न होकर कहने लगे कि अब भोजन संबन्धी चिन्ता से हम मुक्त हो गये । श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजने सभी संत भक्तो के रहने की उत्तम व्यवस्था की थी । रंगोत्सव की तैयारी के साथ अन्य सभी व्यवस्थायें देखकर महाराजने उनसे कहा कि "हे पुत्र ! आप बालक हैं तो भी बुद्धि में वृद्ध जैसे हैं । इसलिये हमने आपको श्रीनगर का अधिपत्य दिया है ।"



फूलदोलोत्सव के दिन श्रीहरिने श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज से श्री नरनारायणदेव का षोडषोपचार पूजन करवाया । उसके बाद श्रीहरि तथा श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज श्री नरनारायणदेव के सन्मुख विराजमान हुये । उस समय मुक्तानंद स्वामीने स्वरचित कीर्तन का गान किया । श्री नरनारायणदेव की आरती का समय हुआ मृदंग-नगारा तथा अन्य वाद्य यंत्रो से सारा वातावरण गूंज ऊठा । श्री अयोध्याप्रसादजीने बड़े भाव के साथ श्री नरनारायणदेव की आरती उतारी । श्रीहरिने भी आनंद में आकर श्री नरनारायण के ऊपर अबीर-गुलाल उछाले । उस समय काल भी मानो दर्शन के लिये थंभ गया हो ।

उसके बाद श्रीहरि सभा के बीच स्व आसन पर पधारे । सोने की पिचकारी लेकर सभी संत-भक्तों पर रंग फेंकने लगे । श्रीहरि को प्रसन्न करने के लिये दोनों देश के आचार्य कौशलदेश की रीति के अनुसार रंगक्रीडा करने लगे । यह देखकर श्रीहरि तथा सभी संत हरिभक्त खूब प्रसन्न हो गये । उस समय के रंग क्रीडा का स्मरण करके आज भी अपने मन में कीर्तन की पंक्ति याद आजाती है - "अवध में होली खेलें रघुवीरा, दो भाई धीरा अवध में होली खेले रघुवीरा" । इस तरह रंग क्रीडा करने के बाद श्रीहरि सभी सत्संगियो को लेकर नारायणघाट स्नान करने गये । वहाँ पर भी सभी जलक्रीडा करके एक दूसरे के ऊपर जल प्रपात किये जिससे सभी को आनंदका दिव्यलाभ मिला ।

बाद में श्रीहरिने सभी संतभक्तों को भोजन करवाया । इस समय श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजकी आज्ञा थी कि सत्संगी हों या कुसंगी हो सभी को भोजन कराना । भोजन कराने में अयोध्याप्रसादजी महाराज तो श्रीहरि जैसे ही थे । बड़े उत्साह के साथ सभीको नानाबिध व्यज्जनों को अपने हाथों से परसने लगे ।

इस तरह अयोध्याप्रसाजी महाराजश्रीने श्रीहरि को प्रसन्न करने के लिये अपने प्रथम फूलदोलोत्सव को बड़े उत्साह के साथ मनाया । वे सभी संत हरिभक्तों को श्रीहरि की तरह आनंदित किये ।



शिक्षापत्री भाष्य की कथा में बड़े महाराजश्री का अमूल्य उपदेश

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

श्रीहरि के अपर स्वरूप प.पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य वाणी का जिसने रसास्वाद किया हो उसके जीवन में शांति का अनुभव होने लगता है। उनके उपदेशात्मक वक्तव्य जीवन में उतारने लायक है। प्रत्येक सत्संग सभा में सभी को नया उपदेश सुनने में आता है।

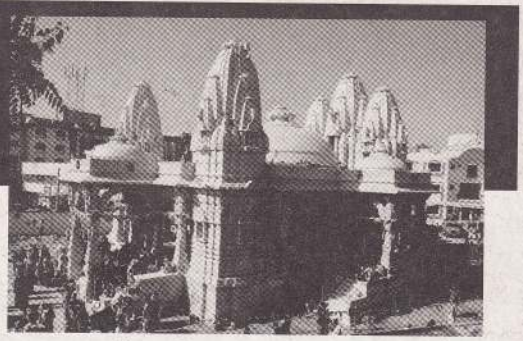
वर्तमान में वडदिया गाँव के जो लंडन में रहते हैं श्रीरामजीभाई मेघाणीने भुज के अ.नि. महंत शा.स्वा. धर्मजीवनदासजी स्वामी के पूर्वाश्रम के परिवार के लोगो ने श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज में शिक्षापत्री भाष्य का पारायण करवाया। ता. ३०-१-०९ शुक्रवार तथा ३१-१-०९ शनिवार के दिन शि.प. जयंती के शुभ दिन पू. बड़े महाराजश्री ने बड़ा सुंदर प्रवचन किया था, जिसमें कथा पारायण के यजमान परिवार को शुभाशीर्वाद भी दिया था।

मनुष्य के जीवन में संत समागम एवं भगवान पर सम्पूर्ण श्रद्धा रखनी चाहिये ऐसा अनुरोध करते हुये पू. आचार्य महाराजश्री ने बाताया कि यदि सौ मन पथ्थर के साथ दश मन लकड़ी बांधकर पानी में डाली जाय तो डूब जायेगी। परंतु सौ मन लकड़ी के साथ दश मन पत्थर बांधा जाय तो अवश्य तर जायेगा। श्रीहरि के कर्तापन का तथा उनमें अटूट श्रद्धा एवं विश्वास रखने की बात पर बताया कि एक स्टीमर मध्य समुद्र में जब पहुँचा तो डूबने जैसी स्थिति होगई, उस समय नाविक ने कहा कि भाई इस समय जहाज की स्थिति ठीक नहीं है डूब सकती है, अब हम सभी की रक्षा भगवान कर सकते हैं, इसलिये आप सभी अपने इष्टदेव का स्मरण करें वे ही रक्षा कर सकते हैं। इतने में एक भाई जोरजोर से गाना गाने लगा और नाचने लगा उसकी पत्नीने कहा सभी लोग अपने इष्टदेव का स्मरण कर रहे हैं और आप नाच गा रहे है, इसं तरह काफी समझाने पर नाराज होकर अपने जेब में से रिवोल्वर निकालकर पत्नी के मस्तक पर लगा दिया, पत्नीने कहा आप मुझे नहीं मार सकते है, पतिने कहा क्यो, क्योंकि आप मेरे पति है, आप पर मुझे विश्वास है। तब पतिने कहा जिसतरह तुम्हे मुझपर विश्वास है, उसी तरह मुझे भी मेरे भगवान पर विश्वास है, वे नही मार सकते, वे अवश्य रक्षा करेंगे। इसीलिये हम नाच गा रहे हैं। इसी तरह हमें भी अपने भगवान में अटूट श्रद्धा विश्वास होना चाहिये। इस समय कोई संत एक स्थ में परस्पर विरोधी स्वभाववालों को कुत्ता, बिल्ली, चूहा, कौआ इत्यादि को खाते देखा - क्योंकि उन्हें खूब भूख लगी थी। हमें भी अपने जीवन में सत्संग की भूख होनी आवश्यक है।

भुज मंदिर के भूतपूर्व महंत स्वामी धर्मजीवनदासजी को याद करके पू. बड़े महाराजश्रीने बताया कि स्वामी के दीक्षा का दिन तथा अक्षरधाम सिधारने का दिन वसंत पंचमी था। चराडवा के महंत स्वा. गोपालचरणदासजी का जीवनभी ऐसा ही था। अपनी बाल्यावस्था का वर्णन करते हुये महाराजश्रीने कहा कि जब हम आठ या नव वर्ष के रहे होंगे उस समय हमारे पूज्य पिताजी अहमदाबाद से कच्छ जब आते तो गाड़ी में आते आज जैसे बस या अन्य साधन नहीं था गमनागमन की सड़के नहीं थी। रण के मार्ग से आना जाना होता, उस रण के मार्ग से कोई भुज जाय तो पाकिस्तान चला जाय ऐसी स्थिति होती थी। इसलिये भुज मंदिर से संत सामने चलकर हमलोगो को लेने आते थे। इस रण प्रदेश के खूब जानकार होते थे ये लोग, जिससे गन्तव्य मार्ग में कोई तकलीफ नहीं होती थी। आज का वाहन व्यवहार बहुत अच्छा है जहाँ जाना हो वहीं आप पहुंचेगे। कहने का अभिप्राय यह है कि आपके जीवन में भी मोक्ष प्राप्ति के मार्ग दिखाने वाले संत ही है। इन्हीं को अपना मार्ग दर्शक मानना चाहिये।

वसंत पंचमी के शुभ दिन वडताल में श्रीजी महाराज संतो के साथ रंग खेले थे। प्रेमानंद स्वामीने जब श्रीजी महाराज पर रंग फेंका उस समय महाराजने बड़े आनंद में कहा था कि "आ घरडी घोडीने ने क्या शरारत चढी गयुं ?" ये सभी रंग खेले गये श्रीजी महाराज के प्रसादी के वस्त्र परंपरा में प्राप्त हुये है, वे आज भी हमारे पास हैं तथा सुरक्षित हैं। जिन्हे हम भक्तों के दर्शनार्थ "श्री स्वामिनारायण म्युझियम रखेंगे।"

मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव
श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा
ता. ५-२-२००९ से ता. ११-२-२००९



श्रीजी महाराजने दंढाव्य देश में अनेकों बार पधारकर अपने चरणों से समग्र दंढाव्य देश को अतिपावन किया था । इसके साथ ही अपने अनेक लीला चरित्रों से ओतप्रोत भगवान का मुख्य शहर महेसाणा जिला जहाँ पर श्रीजी महाराज के माहात्म्य तथा निश्चय करने का अलौकिक चरित्र अर्थात् "कशलीबाई की खीचड़ी ।"

महाराज, साधु-संत तथा काठी दरबारों के साथ रामानंद स्वामी की शिष्या ऐसी नागर ब्राह्मणकशळी बा के यहाँ सायंकाल पधारे । उस समय कशलीबा से स्वयं हल्का भोजन लेने की दृष्टि से कहे कि "खिचड़ी" बनाओं वही ठीक रहेगी । भगवान की रुचि में ही जिसका जीवन है ऐसी कशलीबाने खिचड़ी बनाया और जितनी खिचड़ी उतना ही घी डालकर श्रीजी महाराज के सामने भोग लगाया, बाद में संत एवं काठी दरबार इत्यादि प्रसाद लेने बैठे । महाराज सभी को अपने हाथों से आग्रह पूर्वक खिचड़ी परसकर खिलाया । अलैयाखाचर सुराखाचर जैसे भक्त बोल उठे कि "भोलापन के कारण मांगा नहीं, अन्यथा और भी खिचड़ी खाता" खीचड़ी बच गई तो ढक कर रखदी ।

श्रीजी महाराज की आज्ञा से सभी संत तथा हरिभक्त प्रातः चार बजे उठकर स्नान-पूजा पाठ इत्यादि करने के लिये नदी तरफ जाने की तैयारी कर ही रहे थे कि उसी समय कशलीबा सामने आकर खड़ी हो गयी और कहने लगी कि रात में जो खिचड़ी बनी थी वह बच गई । क्या वह अब फेंकी जायेगी । इसके अलांवा लड्डु भी खिलाना था वह भी रह गया इतना कहते ही आँखों में आंसू भर आये ।

भक्तवत्सल भगवान की तथा अन्य सभी की दैनिक प्रातः कालीन सभी विधि बाकी थी तो भी सभी का अपवाद करके भक्त के भाव के भूखे भगवान सभी संत-भक्तों के हाथ में तसला देकर खीचडी परस दिये । भगवान सभी से कहने लगे कि "खुशी से ग्रहण कीजिये ऐसा कहते गला भर आया । ब्रह्मांड में आज भी खीचड़ी की दतुअन के गीत गाये जाते है ।" महाराज के वचनानुसार जो व्यक्ति इस चरित्र का गान करेगा या सुनेगा वह चाहे जैसा भी होगा उसके अन्त समय में भगवान अवश्य लेने आयेंगे ।

ऐसी दिव्य प्रसादी की भूमि पर १०० वर्ष पुराना हरि मंदिर तो था ही तथा इस महेसाणा शहर में श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के श्रद्धा सहित आस्थावाले हजारो भक्त रहतें हैं । महेसाणा शहर की चारो दिशाओं में व्यापकता बढती जा रही है । जिससे ग्राम्य विस्तार के लोग नौकरी धन्धे के लिए नित्य-नवीन परिवार के भक्तजन बढते जा रहे हैं । श्री स्वामिनारायण भगवान के छठ्ठे वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का संकल्प है कि जगत में मंदिर मनुष्य की आस्था का केन्द्र है । मनुष्य को धर्म के संस्कारो की पुष्टि मंदिर से मिलती है । मन की शांति तथा आध्यात्मिक उन्नति मंदिर में भगवान का दर्शन, पूजन, अर्चन तथा सेवा से होती है ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से महेसाणा शहर के अहमदाबाद- पालनपुर नेशनल हाईवे पर शिखरी मंदिर के लिये श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव स्कीम कमेटी के अथक परिश्रम से पांच हजार चौरस वार भूमि का संपादन हुआ था ।

इस नूतन मंदिर की प्रेरणा देने वाले प.पू.ध.धु. आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री हैं । यहाँ का प्रारंभ भक्ति स्वामी के महंत पद पर हुआ था । बाद में जेतलपुर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मंडल के संतो को उत्तरदायित्व दिया गया था ।

कुल ६०० चौरसवार जमीन में निर्मित मंदिर में ४००० घन फूट के पत्थर दो करोड़ रुपये के खर्च से

मंदिर का निर्माण हुआ है । जो वंशीपुर के संगमरमर जैसे पत्थरों से शिल्प शास्त्र के अनुसार पांच शिखर का भव्य मंदिर का कार्य पूर्ण होते ही मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का दिव्य आयोजन किया गया था । श्री स्वामिनारायण भगवान जिस तरह श्री नरनारायणदेव को स्वयं अपनी बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किये थे, ठीक उसी तरह श्री स्वामिनारायण भगवान के छट्ठे वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने स्तंभ को बांह में भरकर अलौकिक दर्शन का सुख दिया था । आज वह स्तंभ ईशान कोण में दर्शन् का लाभ दे रहा है ।

श्री स्वामिनारायण भगवान की सर्वधर्म समभाव तथा सर्वजीव हितावह प्रणाली को ध्यान में रखकर मनुष्य की आस्था, श्रद्धा इष्टदेव में हो इसलिये मंदिरो का निर्माण करवाये । इसीके साथ विशाल सभा मंडप, भोजनालय, धर्मशाला, संत निवास, इत्यादि का निर्माण करवाये । देश-विदेश में अलग-अलग सेवा प्रारंभ किये । मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव माघ शुक्ल-१० गुरुवार ता. ५-२-०९ से माघ वश-२ बुधवार ता. ११-२-०९ तक उत्सव मनाने का निश्चित हुआ । इसी की बहुत दिनों से प्रतीक्षा थी । अंततः दंढाव्य देश में यह अलौकिक एवं दिव्य उत्सव मनाने की तैयारी तीन महीने से प्रारंभ हो गई । हरिभक्त महोत्सव की तैयारी में लग गये । श्री स्वामिनारायण नगर के सम्पूर्ण मैदान को समतल करने के लिये पांच ट्रैक्टर एवं सौ स्वयं सेवक रात-दिन लगे रहे ।

महेसाणा के महंत शा. स्वामी उत्तमप्रियदासजी तथा स्वामी नारायणस्वरूपदासजी के नेतृत्व में महोत्सव का आरंभ माघ शुक्ल-९ के दिन ता. ७-१२-०८ के दिन नूतन मंदिर के प्रांगण में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से "विजय स्तंभ" विधि समग्र दंढाव्य देश के हरिभक्त तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के विशाल सभ्यों की उपस्थिति में संपन्न हुई ।

देखते-देखते रंग रोगान के साथ सोना तथा चांदी के द्वार से अलंकृत मंदिर स्थापत्य कला एवं विविध नक्शा से युक्त तैयार हो गया । भगवान की आज्ञानुसार "वास्तु विधि" का आयोजन सम्पूर्ण वेदोक्त विधि माघ शुक्ल पंचमी ता. ३१-१-०९ के दिन संपन्न हुई । भक्तों के मनमें आनंद की सीमा न रही जब भगवान स्वयं यहां आकर विराजमान होने वाले है । माघ शुक्ल-१० मी के दिन गुरुवार ता. ५-२-०९ के शुभ दिन भक्तों का समुदाय एकत्रित होने लगा । गेस्ट हाउस, स्वयं सेवक कार्यालय, मध्यस्थ कार्यालय, पूछपरछ कार्यालय, सभा मंडप, स्टेज, मेडिकल, दान-भेंट, साहित्य केन्द्र, क्लोक रूम, भोजनालय विभाग जैसे कार्यालयों में करीब १००० जितने कार्य सेवक सेवा में लग गये । हरिभक्त चाय-पानी-नास्ता करके सभी आमंत्रित सत्संगी, संत, महंत तथा नगरजन प्रातः ८-०० बजे १५ कंबाईनगर सोसायटी, महेसाणा के श्री नटवरभाई फूलचंदभाई मोदी के निवास स्थान से निकली हुई पोथीयात्रा मानो श्रीनरनारायणदेव महाप्रभु के आगमन से सारा शहर स्तब्ध सार हो गया हो । पोथीयात्रा श्री स्वामिनारायण नगर एस.टी. वर्कशोप ग्राउन्ड, महेसाणा आकर विराम ली थी ।

एस.टी. वर्कशोप ग्राउन्ड महेसाणा के विशाल मैदान में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव अंतर्गत दिव्य सभा मंडप जिस में ५०० फूट x १०० फूट का विशाल सभामंडप जिस में एक भी स्तम्भ नहीं था । उसी सभा मंडप में १०० x ४० फूट का स्टेज बनाया गया था । जहाँ पर प्रथम दिन प्रागट्य के साथ मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा से सम्बन्धित महोत्सव की आरंभ विधि हुई थी । श्रीमद् भागवत् सप्ताह पारायण प.पू. शास्त्री स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजीके व्यासासन पर सम्पन्न हुई थी । जिस में करीब १०८ जितने संहिता पाठ के लिये भूदेव एवं संत विराजमान थे । प्रथम दिन विशिष्ट मेहमानो का सन्मान किया गया था ।

दूसरे सत्र में अधिक संख्या में ज्ञानामृतपान करने वाले उपस्थित हुए । इस महायाग में विशेषता यह थी कि भगवान के महाप्रसाद लेने के लिये हरिभक्त तथा मेहमान सभी के लिये समान व्यवस्था थी । महिलाओं के लिये कशली बा भोजनालय तथा पुरुषों के लिये अवधप्रसादजी भोजनालय का आयोजन किया गया था। जिसमें मूली देश के स्वयं सेवकों द्वारा सेवा कार्य संपन्न हुआ । दिनभर कथावार्ता तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम होता था । जिस में ५-२-०९ को श्री नरनारायणदेव युवक मंडल माणेकपुर तथा बालवा द्वारा विविध कार्यक्रम में जलती हुई ज्योति प्रगट करके जय

सद्गुरु स्वामी की आरती एवं बेटी बचाओं विषय पर प्रवचन देकर पुत्री का महत्व समझाकर भगवान श्री स्वामिनारायण के सिद्धांत का संदेश दिया गया था। ऐसे विविध कार्यक्रमो द्वारा जनमानष के हृदय को जीतलिया गया था।

दूसरे दिन भी धर्मप्रेमी जनता ने कथा पारायण का लाभ लिया था। इसी दिन पूज्या बड़ी गादीवालाजी पधारकर महिला वर्ग को दर्शन-आशीर्वाद का लाभ दी थी। रात्रि के समय सांस्कृतिक कार्यक्रम में नरनारायण युवक मंडल विसनगर द्वारा संप्रदाय के नियमानुसार नीति-नियम पर आधारित नाटक तथा सत्संग में संतो द्वारा किये गये जीवन परिवर्तन पर स्मक का भी प्रस्तुती करण किया गया था। बाल हास्य कलाकार निखिल रावत ने सभी को आनन्दमग्न कर दिया था। तीसरे दिन भगवान के स्मरण के साथ वक्ता महोदय द्वारा अमृतमयी वाणी से भगवान के प्रादुर्भाव का वर्णन होते ही सभी मन्त्रमुग्ध हो गये थे। उसी दिन ब्लड डोनेशन केम्प तथा २५० स्मये में सम्पूर्ण शरीर का निदान केम्प लगाया गया था। रात्रि के समय नंद संतो द्वारा रचित भगवत कीर्तन का श्री विजय भराड तथा उनके मंडल द्वारा प्रस्तुती करण से सभी आनन्दित हुये थे।

चौथे दिन श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण प्रसंग पर लीला पुरुषोत्तम नारायण श्री कृष्णचन्द्र परमात्मा के जन्मोत्सव को बड़े धूमधाम से मनाया गया था। रात्रि के समय जितुभाई द्वारकावालाने सांस्कृतिक प्रोग्राम में चुटकुले सुनाकर आनंदित किया था।

पांचवे दिन भगवान के बाल लीला चरित्रो को बड़ा सुखदवर्णन किया गया जिसे सुनकर श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो गये थे। इस दिन शा. श्री राजेन्द्रभाई शुक्ल (उमरेठवाला)द्वारा वेदोक्त विधि से भगवान की मूर्ति की प्रतिष्ठा की गई बाद में विष्णुयाग प्रारंभ होने से पूर्व देहशुद्धि का कार्यक्रम किया गया था। इसी दिन श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा वैष्णवाचार्य वाघेशकुमारजी महाराज (कांकरोली) उपस्थित होकर दर्शन-आशीर्वाद का लाभ दिये थे। रात्रि के सांस्कृतिक कार्यक्रम में संप्रदाय के सुप्रसिद्ध गायक श्री जयेशभाई सोनी नंद-संतो द्वारा रचित कीर्तन का गायन किये थे।

छठे दिन ता. १०-२-०९ मंगलवार के दिन प्रातः ८-०० बजे महाशक्ति ग्राउन्ड से भगवान के अभिषेक की कलशयात्रा प्रारंभ हुई थी। जिसमें हजारो कुमारिकायें ताम्रकलश मस्तक पर रखकर मंगल गीत के साथ जब मंदिर के प्रांगण में पहुंची तो सारा वातारण भव्य बन गया था। इसी दिन श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा प्रवर्तित प्रणालिकानुसार ब्राह्मण कुमारों के यज्ञोपवीत विधि संपन्न की गई थी। दोपहर में तीन बजे भव्यातिभव्य शोभायात्रा महेसाणा शहर के राजमार्ग पर निकली जिस शोभायात्रा में बैन्डपार्टी के सुमधुर आवाज के साथ भक्तों के गीत से सारावातावरण गुंजित हो उठा था। इस शोभायात्रा में १० बैल गाड़ी अलंकृत की गई थी। जिसपर दादा खाचर के बाराती, संप्रदाय की शिक्षापत्री के सूत्र, सर्वजीव हितावह, उपदेश के सूत्र तथा यजमान विराजमान थे। २ अलंकृत हाथियों पर संत दर्शन दे रहे थे। २ हाथियों पर यजमान बैठे थे। शोभायात्रा में दश अलंकृत घोड़ो पर न.ना.यु.मंडल के सभ्य विराजमान थे। इसके अलांवा अलग-अलग १० ट्रेक्टर पर भगवान का रथ जिस में स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति तथा अन्य ट्रेक्टरों पर भजन मंडली थी जिससे सारावातावरण कीर्तनमय हो गया था। एक विशिष्ट अलंकृत ट्रेक्टर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को विराजमान किया गया था, जिनका दर्शन करके सभी को सुख शांति मिल रही थी। इस शोभायात्रा में हरिभक्त अपने जीवन का परम आनंद प्रात कर रहे थे।

इस शोभायात्रा में करीब २०० त्यागी बहनें भी दर्शन दे रही थी। १० फूट ऊँचे बांस पर ५ आदमी चलकर आकर्षण का केन्द्र बने थे। इसमें ५०००० जितने सत्संगी तथा अन्य भी साथ चलकर शोभा बढा रहे थे। महेसाणा शहर में ऐसी अद्भुत शोभायात्रा देखकर लोग पुलकित हो रहे थे। जिस में स्कूटर, बाइक तथा गाड़ियों जैसे अनेक वाहन शोभायात्रा में सामिल थे। यह शोभायात्रा निकलने के बाद सायंकाल ६ बजे सभा मंडप में वापस पहुंची थी। रात्रि में फटाकड़े फोड़कर आतिशबाजी की गई थी। समग्र महोत्सव का लाइव प्रसारण महेसाणा शहर की चैनल पर किया गया था। इन्टरनेट वेबसाईट द्वारा प्रत्यक्ष प्रसारण का लाभ वहाँ की जनता ने लिया था। इस महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रातः ६ बजे से ७ बजे तक योगाचार्य स्वामी विजयानन्दजी महाराज (हरिद्वार) द्वारा योग के शिबिर का आयोजन किया गया था। जिस में करीब ५०० शिबिरार्थियों ने भाग लिया था।

वर्षो से जिसकी प्रतीज्ञा चल रही थी वह घड़ी आ ही गई। हरिभक्तों की जन मेदिनी भरने लगी।

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

प्रसंग के शुभ दिन अर्थात् ता. ११-२-०९ को प्रात ७-०० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के पदार्पण होते ही द्वार पर वैदिक मंत्रो का पाठ करते हुए भूदेवो से तथा नाना विध वाद्य यंत्रो से स्वागत किया गया । बाद में मंदिर में श्री घनश्याम महाराज, श्री राधाकृष्णदेव तथा श्री नरनारायणदेव की वैदिक विधि से प्राण प्रतिष्ठा की गई थी ।

दर्शन की सुन्दर व्यवस्था के आयोजन से हरि भक्तों को थोड़ी भी परेशानी के विना दर्शन का लाभ मिल रहा था, जिस में प्रत्यक्ष श्रीहरि के अपर स्वरूप तीन रूप में दर्शन दे रहे थे, जो टी.वी. के माध्यम से बड़ा ही सुलभ दर्शन हो गया था ।

श्री कष्टभंजन देव, श्री गणपतिजी महाराज को मुख्य द्वार पर प्रतिष्ठित किये । प्रतिष्ठा विधि पूज्य महाराजश्री के हाथों से संपन्न हुई थी । आये हुये भक्तजन तथा नगर के वासी नरनारी सभी इस दर्शन का दिव्य लाभ लेकर अपने जीवन को धन्य समझ रहे थे । इस अवसर पर आकाश मार्ग से पुष्प वृष्टि की गई थी ।

बाद में भगवान के अपर स्वरूप द्वारा यज्ञनारायण की पूर्णाहुति के लिये नारियल का हवन किया गया था । शास्त्र के सिद्धान्तानुसार व्यक्ति मंदिर के ध्वजा का भी दर्शन करले तो उसे ईश्वर के दर्शन का फल मिलता है । मंदिर के पांचो शिखर पर ध्वजा एवं कलश की विधि प.पू. महाराजश्री द्वारा राधाकृष्णदेव, श्री नरनारायणदेव सर्वप्रथम आरती उतारी गई थी ।

इस महोत्सव प्रसंग पर श्रीमद् भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ का आयोजन पूर्ण होते ही आरती उतारी गई थी। दाताओं का संमान किया गया था । इस प्रसंग पर जिला कलेक्टर साहब तथा जिला न्यायाधीश विशेष रूप से उपस्थित होकर प.पू. महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किये थे ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री अपने आशीर्वचन में ज्ञानो पदेश करते हुये कहे कि इन सभी प्रतिष्ठित देवों का नित्य दर्शन करने से अलौकिक सुख की प्राप्ति होगी ।

प.पू. बड़े महाराजश्रीने अपने आशीर्वचन में बताया कि जीवन में बहुत सारे मंदिरो की प्रतिष्ठा हुई लेकिन आज जिस दिव्यता का अनुभव हुआ उसमें यह कि जब एक साथ श्री घनश्याम महाराजश्री राधाकृष्णदेव श्री नरनारायणदेव इत्यादि देवों की प्रतिष्ठा हो रही थी उस समय मैने प्रत्यक्ष रूप से सूर्यनारायण भगवान के दिव्य प्रकाश का यहाँ पर दर्शन किया । इस प्रसंग पर संप्रदाय के भावि आचार्य पू. लालजी महाराजश्री ने अपनी अमृतमयी वाणी में व्यक्त किया कि एक गुरुको अनेक शिष्य थे उस में से किसे गद्दी पर बैठाया जाय इसके लिये गुरुने सभी की परीक्षा हेतु चना दिया, जिसमें से कुछने चना खालिया कुछने पूजा में रखलिया, एक शिष्यने चना लेकर मिट्टी में बो दिया (वपन कर दिया) वह एक चना अनेकों होकर पैदा हुआ । बाद में गुरुजी सभी शिष्यों को बुलाकर चना की उपयोगिता के विषय में पूछा तो सभीने आपवीति बता दी । अन्तिम में जिस शिष्य ने चना को मिट्टी में बोया था उसके एक चने से कालान्तर में बोरी भरकर चना हुआ, वह बोरी भरकर चना गुरुको लेकर देदिया । यह दृष्टांत समझने लायक है - अपने स्वयं सत्संगी हों यह तो ठीक है लेकिन अगल-बगल के भी लोग सत्संगी बने तभी सत्संग रूपी बट वृक्ष तैयार होकर सभी को मीठा फल देगा ।

समग्र उत्सव अर्थात् सभी के लिये यादगार । उत्तर गुजरात में चारो तरफ यह फैल गया है कि मूल स्वामिनारायण संप्रदाय में एक मात्र श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा प्रतिष्ठित आचार्य से जिसकी मूर्ति प्रतिष्ठा हो वही सेवा के योग्य है वही लाभकारी है ।

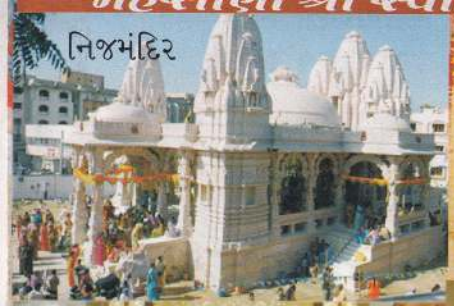
इस प्रसंग पर १०८ जितना श्री भागवत संहिता का पारायण किया गया था । जिसमें संत-पवित्र ब्राह्मण सात दिन तक पाठ करते रहे । प्रतिदिन राजकीय - धार्मिक नेताओं का सम्मान होता रहा ।

इस प्रसंग में विविध धामों से संत पधारे थे । सात दिन तक ५०० जितने संत दर्शन का लाभ दिये थे । अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी, मूली, वडताल, भुज (कच्छ), गढडा, जूनागढ, धोलेरा, छपैया इत्यादि धामों से संत पधारे थे ।

इसके साथ ही अहमदाबाद, मूली, भुज (कच्छ) विस्तार की सां.यो. बहनें भी पधारी थी ।

अंत में मंदिर के निर्माण कार्य में उत्सर्ग करने वाले शा.स्वा. उत्तमप्रियदासजी तथा स्वा. नारायणप्रसाददासजी का पूज्य महाराजश्रीने तथा संतोने एवं हरिभक्तोंने संमान किया था । इसके साथ जेतलपुर, जयपुर के संतो का भी बहुमान किया गया था । इस मंडल की तरफ से श्री नरनारायणदेव को श्रेष्ठ मंदिर की भेंट मिली । जिसका लाभ हजारो भक्तजन ले रहे हैं ।

(महेश भावसार, विसनगर)













प्रतिष्ठा विधि का दर्शन







महा अभिषेक

दर्शनार्थी

यज्ञविधि







महाविष्णुयाग







दाताओं का सन्मान









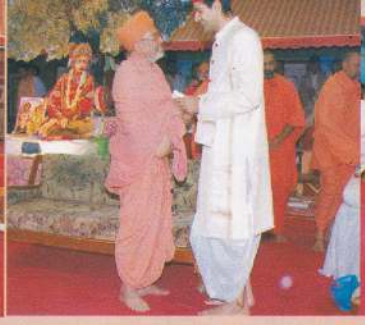


विशाल सभा





दाताओं का सन्मान



संतो का कुशल पूछना



धर्मकुल का पूजन



श्रीकृष्ण जन्मोत्सव



सभा में दर्शन देते हुये
प.पू. बड़े महाराजश्री



व्यासपीठ की समूह आरती



पोथी पूजा यजमान द्वारा



मा. नीतिन पटेल का सन्मान



१०८ श्री वाघेशजी महाराज
कांकरोली पीठाधीश्वर











भोजनालाय

संतो का भोजनालय






सर्व रोग निदान केम्प





सांस्कृतिक कार्यक्रम

योग केम्प

यज्ञ विधि








ोभायात्रा

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

रुपयों का बरसात

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

"सजनी आरे चोघड़ियु अमृत लाभनुं" ऐसा अमूल्य अवसर मिलता हो तो कौन छोड़ेगा । परमात्मा प्रत्यक्ष आसन पर विराजमान होकर दर्शन दे रहें हों तो भक्तों के लिये क्या शेष रहता है ?

प्रथम संतोने पूजन किया बाद में भक्तों ने पूजन किया । सभी महाराज के पास भेंट में कुछ रखते थे, कुछ शक्कर रखते तो कुछ फूल रखते तो कुछ चांदी का सिक्का रखते थे, उस जमाने में चांदीका सिक्का चलता था । इतना अधिक चांदी का सिक्का आया कि महाराज आनंद में आकर उन सिक्कों को लुटाने लगे । अगल-बगल के मकान पर जाकर गिरने लगे । हुआ ऐसा कि एक वृद्धा मां का बगल में ही खपरैल का मकान था, उसके खपरैल पर जाकर वे सिक्के गिरने लगे । अब वह वृद्धा मां गाली देते हुए बाहर आई-कौन मर गया है जो मेरे मकान पर पत्थर मार रहा है । लेकिन बाहर आने पर उसे चांदी के सिक्के मिले तो वह शांत हो गई और प्रतीक्षा करने लगी कि कोई पुनः इन चांदी के सिक्कों की बरसात करे लेकिन परमात्मा तो अनासक्तों पर बरसात करते हैं चाहने वालों पर उनका प्रेम नहीं होता है । अब वृद्धा मां कान लगाकर बैठ गई कि खपरैल पर सिक्के गिरें कि लूटने जाऊँ लेकिन पुनः ऐसा हुआ नहीं । उन स्मयों का क्या हुआ ?

ईश्वरलीला बड़ी अलौकिक है । उनके हाथ का स्मया जिन्होंने प्राप्त किया वे सुखी हो गये । उनके घर से दरिद्रताचली गई । वह स्मया प्रसादी का था । उसे प्राप्त कर धन भागी हो गये । सुदामाजी भी द्वारिकाधीश से हाथ में कुछ भले नहीं प्राप्त किये लेकिन परमात्माने उन्हें बिन मांगे अव्यक्त स्म से पूरा घर भर दिया और जीवन सुखी हो गया । यही ईश्वर की लीला है ।

कारियाणी तो छोटा सा गांव वहाँ के लोगों की स्थिति देखकर भगवान के मन में हुआ था कि इन्हें सुखी करना है । इसलिये जब वहाँ के भक्तों ने थाली का भोग अर्पित किया तो भगवानने कहा कि इस प्रसाद को सभी गाँववासी आपस में बांटले ऐसा ही हुआ और सभी सुखी हो गये ।

"हे कस्गाना करनारा तारी कस्गानो कोई पार नथी" । भगवान की कृपा अपरंपार है । "जनम्यु तेने जीवाडवाने उपाय शोध्यो शुद्ध जोने, हाड मांसना हैयां मध्ये देवे सर्ज्या दूध जोने ।" यदि भगवान के ऊपर भरोसा हो तो प्रभु किसी को दुःखी नहीं होने देते । हाँ इतना अवश्य हैं कि थोड़ा सचेत रहने की जरूरत अवश्य है । कभी भी आपके घर पर स्मयों की बरसात हो सकती है । पत्थर मानकर बैठ मत जाइयेगा ।

जो स्वामिनारायण भगवान की आज्ञा में रहकर उनकी भजन करते हैं उन्हीं के लिये प्रभु ने स्मयों की बरसात की थी । एक पुरानी कहावत है "खुदा देता है तो छप्पर फाड़कर देता है ।" भगवान अपने भक्तों को सुखी करने के लिये उक्ति को चरितार्थ करते हैं ।

•

सहजानंदी सिंह कैसा होना चाहिये ?

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

किसी कारण से यदि कोई तिलक चंदन न करता हो तो वह इस लेख को अवश्य पढे । ऐसी एक घटना है। एक युवान शूरवीर की बात है । लड़ाई में ही शूरवीरता की जरूरत होती है । ऐसा नहीं है । धार्मिक जीवन में तो विशेष, इसीलिये तो भजन में कहा जाता है ..... "हरिनो मारग छे सूरनो, नहि कायरनुं काम जोने ।"

इस युवान ने जब से सत्संग किया तब से तिलक-चंदन करने लगा । कोई हंसी-मजाक करे तो वीरता के साथ उसका उत्तर देता । इस युवान की सुखी जिंदगी देखकर पड़ोशी तथा सगे सम्बन्धि इर्ष्या करने लगे ।

समय मिलते उसके तिलक चन्दन को मिटाने के लिये तथा कंठी तोड़ देने के लिये कटि बद्ध हो गये ।

उत्तम कार्य करने वाले को जैसे अवसर मिलजाता है। वैसे ही इर्ष्यालुओं को भी अवसर मिल जाता है । बात ऐसी हैं कि इस युवान का विवाह निश्चित हो गया । २० मील दूर बारात जाने वाली थी । बारात में वे ईर्ष्यालु सगे संबन्धि भी थे । बैल गाड़ी की सवारी करके सभी चलदिये । पहुँचने पर लड़की पक्ष के लोगो ने खूब सुंदर स्वागत किया । गाँव के बाहर स्कूल में ठहरने की व्यवस्था की गई थी । सभी को नानाविध व्यज्जनों के साथ भोजन कराया गया । सुन्दर भोजन की व्यवस्था से लड़की के पक्ष का आर्थिक ख्याल आ रहा था कि वे लोग बड़े सुखी हैं ।

सभी लोग भोजनादिक कर लिये उन्मुक्त होकर इधर उधर बैठकर अपने उम्र के अनुसार सभी बातें कर रहे थे। उसी बीच लड़की के पिता वहाँ आये जो लड़के (वर) के ईर्ष्यालु जन थे उनसे कुछ बातें कर रहे थे । यह लड़के ने स्वंय देखा । जिस कक्ष में वर था वहाँ कन्यापक्ष से दोतीन लोग जिसमें स्वयं कन्या के पिता थे, बर के पास गये और कहने लगे कि आप तिलक-चंदन मिटा कर कंठी तोड़ दो और स्वामिनारायण के सत्संग से अलग हो जाओं नही तो हमें कुछ और विचार करना पड़ेगा । वरराजाने कहा आपको जो विचार करना हो वह करो हमारे लिये तो सत्संग ही मस्तक पर है ।

श्वसुर ऐसा उत्तर सुनकर अबाक् रह गये । उन्हें ईर्ष्यालुओं ने खूब चढाया था, लेकिन वरराजा दृढ संकल्प वाले थे इसलिये उन्होंने श्वसुर के पुनः यह कहने पर कि विवाह के समय केवल कंठी निकालकर तथा तिलक चंदन के विना आप शादी करें बाद में पहन लीजियेगा । तो वरराजाने स्पष्ट कह दिया कि विवाह के विना हम वापस चले जायेंगे लेकिन तिलक-चंदन एवं कंठी निकालने की बात मत करें । ईर्ष्यालुओं की एक नहीं चली तो उन्होंने तीसरा प्रकरण चलाया कि केवल पाणि ग्रहण के समय इतना आप कह जीदियेगा कि मैं सत्संगी नहीं हूँ । अब लोग इतना कहने के लिये दबावडालने लगे । रात्रि में लग्न मंडप में विवाह के समय खूब भीड़ लगी थी सभी लोग वरराजा के मुंह से सुनने के लिये कि वे क्या कहते हैं जब पाणिग्रहण का समय आया तो लोग कहने लगे कि आप कहिये कि हम सत्संगी नहीं है, उस समय वरराजाने कहा कि मेरी सास को मेरे पास में बुलाकर ले आइये । सासुजी आई, उनसे उस युवक ने कहा कि पहले आप कहे कि ये आपके पति नहीं है तो बाद में मैं कहूँगा कि मैं सत्संगी नही हूं । सासुजीने कहा यह कैसे हो सकता है, यदि यह नहीं हो सकता तो यह भी नहीं हो सकता । अब श्वसुरजी आप यह बतायें कि आपके मनमें यह विचार क्यों आया । तब उन्होंने कहा कि वरराजा के ही पक्ष के लोगो ने इस तरह करने के लिये कहा था । सभी को यथार्थ का ख्याल आ गया । श्वसुरजीने विवाह कि विधि संपन्न की । धूमधाम के साथ कन्यादान किये । खूब तैयारी के साथ बारात की विदाई हुई । ईर्ष्यालुओं की एक भी विधि पूर्ण नहीं हुई वे सभी पराजित हुए , अपमानित हुये । मित्रों ! यह बात पढकर आप को सत्य का ज्ञान हो गया होगा । वह युवक शादी त्यागने को तैयार था लेकिन कंठी-चंदन-तिलक त्यागने को तैयार नहीं था । इसी को शूरवीरता कहते हैं । इसी को सच्चा सत्संगी कहते हैं । इसी को सहजानंदी सिंह कहते हैं । अब आप विचार करलें कि आप कैसे वीर है । आपकी शूरवीरता कैसी है ?

धर्मकुल वंदना महोत्सव में स्वयं सेवक की सेवा करने के लिए

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की अध्यक्षता में प.पू. आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की २०० वीं जन्म जयन्ती द्विशताब्दी धर्मकुल वंदना महोत्सव में जिन भाई-बहनो को कार्य सेवक के रूप में सेवा करने की इच्छा हो, वे अपने विस्तार के मंदिर से स्वयं सेवक के युनिफार्म तथा तत्सम्बधित जानकारी कर सकते हैं ।

स्वयं सेवक का फार्म भरकर ता. १५-४-२००९ तक अपने विस्तार के प्रतिनिधि के पास जमा करा दें ।

भक्तिसुधा

भात के पुण्य का फल महाराज ने जसुबा को दिया

- गंगाणी जसुबहन दयालजीभाई (नवावाडज)

गढपुर में एक समय श्रीजी महाराज प्रातः काल के समय दादा खाचर के दरबार में विराजमान थे। उस समय महाराजने भगुजी को बुलाया। भगुजी ! आप कुंवर बां को बुलालाइये न ? भगुजी कुंवरबा से जाकर कहते है, बा महाराज आपको याद करते हैं। कुवरबां जल्दी से महाराज के पास आगई। महाराज के चरण पर गिरकर कहने लगी कि महाराज ? इस दासी को क्या आज्ञा हैं ? महाराज थोड़े समय तक कुंवरबा को देखते ही रहे। बाद में कहे कि कुंवरबाइ ? आपके श्वसुर जब धाम में गये तो दादा का हाथ मेरे हाथ में देकर गये, यह बात आप जानती हैं न ? और भी आपके वंश में वारस न हो तो लोक में ठीक नहीं कहा जायेगा। ऐसा कहकर महाराज कुंवरबा की तरफ देखते ही रहे। कुंवरबाई कहती हैं कि हे महाराज ! आप स्पष्ट कीजिये गोल-गोल बात मत करिये। महाराज ने कहा हे कुंवरबा ! हम दादा का दूसरा विवाह करना चाहते हैं। इस में आपकी सहमति चाहिये। कुंवरबाईने कहा यह कार्य कल होता हो तो आज ही कर दीजिये। आप की आज्ञा से अधिक कुछ नहीं है। तो आप ही दादा को समझाइये महाराजने कहा। कुंवरबाई दादा खाचर के पास गई महाराज की आज्ञा सुना दी। सुनते ही उन्होने मना कर दिया और कहे कि हमें नहीं पुत्र चाहिये और नहीं कोई परिवार चाहिये। ऐसा कहकर अपने काम में लग गये। पुनः कुंवरबा महाराज के पास जाकर कहीं कि महाराज ! आपहीं उन्हें समझाइये। महाराज दादा खाचर को बुलाये और कहे कि दादा। हम आपकी दूसरी शादी करायेंगे। दादा विचार कर महाराज को कहते हैं।

"तमे जो प्रभु जान मां आवो, पासे रही मने परणावो।
तो हुं पाणी ग्रहण करीश, आज्ञा आपनी माथे धरीश।"

अब दादा खाचर से महाराज ने कहा -

"हांक्यो अर्जुननो रथ जेम, तमारो रथ हांकीश तेम।"

दादा खाचर तथा कुंवरबाई दोनो की संमति मिल गई। अब महाराज के दर्शन हेतु जो भी आता उससे पूछते कि हे भाई ! आपकी दृष्टि में दादा लायक कोई कन्या है ? उसी अन्तराल में कालुवावडिया दर्शन करने आये। उनसे भी महाराज ने पूछा कि आपकी दृष्टि में दादा के योग्य कोई कन्या है। हाँ महाराज, दादा के योग्य कन्या है। महाराज आनन्दित होकर कहने लगे वह कौन है ? जल्दी बताओ। कालुवाडिया कहने लगे हे महाराज -

"भट्टवदर नामे छे गाँव जाणी कन्या कुंवारी ते ठाम,
महामुक्त ते जन-तन धारी, जसुनामे ते सद्गुणी सारी।"

यह सुनकर महाराज ने कहा आप भट्टवदर जल्दी जाइये। यदि नागपाल वरु हाँ कह दें तो उनसे श्रीफळ (नारियल) तुरंत भेंजवा दी जियेगा। कालुवाडिया भट्टवदर आये तथा सभी महाराजकी वात नागपाल वरुको कह दिये। सुनते ही नागपाल के आनंद की सीमा न रही। नागपाल जसुबा के लिये नारियल-चुनरी भेंज दिये। जसुबा तो चुंदडी देखते ही आनंदित हो गयी। महाराज विवाह की साइत दिखवाये। माघ शुक्ल पंचमी के दिन निश्चित हुआ। विवाह की तैयारी होने लगी। जैसे बेटे की शादी में बाप को कितना आनंद होता है ठीक यही स्थिति दादा के शादी में महाराज को आनंद हो रहा था। बैल गाडी में भर-भर कर सभी तैयार हो गये। महाराज ने भी बैलगाड़ी सजाई और दादा से कहे दादा ! आप अब बैठ जाईये। दादाने कहा महाराज। पहले आप बैठिये। महाराजने कहा मैं आपका सारथी हूँ ऐसा कहकर संतो से कहे कि आप सभी दादा के रथ में आजाइये। संत भी दादा के विवाह में चल दिये। सभी बाराती खूब बनठन करके भट्टवदर पहुँच गये। गाँव के बाहर ही बन्दूकों की आवाज से सूचित कर दिया गया कि बारात आ गई है। नागपाल वरुस्वयं गाँव के बाहर तक मिलने गये। महाराज नागपाल वरुको पूछे कि विवाह की सभी तैयारी हो गई है न ? महाराज सभी तैयारी तो हो गई है लेकिन पानी की थोड़ी तकलीफ है। आप चिंता मत कीजिये, आप मेरे साथ आइये। समुद्र के किनारे जाकर अपनी छड़ी से एक गोलाकार बनाये और कहे कि यहाँ खात करिये यहीं पर मधुर जल निकलेगा। ऐसा ही हुआ। खोदे जाने पर असीमित मधुरजल का भंडार निकल आया। यह आश्चर्य देखकर नागपाल महाराज के चरणों में गिर पड़े। उन्हें कंठी बांधकर अपना सत्संगी बना लिये। नीलकंठ वर्णी स्म में एक बार जब महाराज उसी गाँव में आये थे तो बहुत सारी लड़कियां बाहर खेल रही थी, वही पर महाराजने कहा था कि "हमे कोई भोजन खिलायेगा" तब जसुबा दौड़ते हुये घर से जाकर भात लाकर खिलाई थी। कोईनो भार न रखे मुरारी, आये व्याज सहित गिरधारी।

इधर बारातियों को वापस आने में विलम्ब देखकर जसुबा महाराज की प्रार्थना करती हैं -

"वाला तमारी वाटडी, जी रे जोवुं धर्मकुमार जोवुं,
रसिया धर्मकुमार जोवुं, वहेला आवो गढपुरथी,
ओसरिये उभी एकली, जी रे रसिया धर्मकुमार
रसिया धर्मकुमार, वेल आवो गढपुरथी।"

जसुबा इस तरह प्रार्थना कर रहीं थी कि उसी समय महाराज बारातियों के साथ पहुंच गये। दादा विवाह मंडप में विराजमान हुये, उसी समय जसुबा भी खूब अलंकृत होकर वहाँ पर (मंडपमें) आई। महाराज अपनी उपस्थिति में दोनो का विवाह संस्कार संपन्न करा दिये। दादा एवं जसुबा दोनो महाराज के चरणों में गिर पड़े। उस समय महाराजने दादा को सोने की चयन अपने गले से निकाल कर दे दी। जसुबा को कीमती जरीवाली साड़ी भेंट में दी। जसुबाने महाराज से

वरमांगा ।

मारी अविचल चूडीने राखजो,
मारी चूड़ीनो भंग न थाय, मागुं वर नाथजी ।
अभय वंशने सुखी राखजो
प्रभु आपजो पुत्रने जोड़, मागुं वर नाथजी ।

लग्न पूर्ण होते ही नागपाल वरुसे महाराजने विदाई मांगी । नागपाल ने भी बड़े आनंद के साथ विदाई किया । महाराज गढपुर आकर जसुबा की गोंद भरने के लिये सोपारी दिये । जसुबा उस सोपारी को अपने जीवन में सुरक्षित रखी रहीं । दादा के यहाँ दो पुत्रों का जन्म हुआ । एक का नाम मावाखाचर दूसरे का नाम अमरा खाचर रखा गया । दोनो भाई बड़े होते ही जसुबा की सोपारी को दो भाग कर दिये । उसी सयम से इनके परिवार में भाग होता आ रहा है । देखो भक्तजन ! महाराज को एकबार भात खिलाने का परिणाम जो महाराज जसुबा पर कितनी दया की ? तो हम सब भी भगवान को भोजन कराये विना न करें । प्रभु को भोजन कराकर स्वयं प्रसाद ग्रहण करें ।

●

गंगा माँ

- आनंदीबहन विष्णुभाई पटेल (गुलाबपुरा)

भगवान श्री स्वामिनारायण गंगामा को "मा" कहकर बुलाते थे । वे जेतलपुर की विसनगरी ब्राह्मणी थीं । गंगा मां नीति-नियम में बहुत कड़क थी । उनका मायका नारदीपुर था । यज्ञ में नारदीपुर के छोटे भाई को यजमान बनाया गया था, इससे सभी लोग यहमानते थे कि गंगामां के छोटे भाई होंगे । गंगा मां को एक बेटी थी । वे रामानंद स्वामी की अनन्य शिष्या थी । अपने विशाल घर के एक भाग में रामानंद स्वामी का मंदिर, जिस में राधाकृष्ण की मूर्ति रखती थीं, उन्ही की पूजा करती थी । जो आज भी जेतलपुर धाम में घनश्याम महाराज के मंदिर में सिंहासन के बगल में रखकर पूजन किया जाता है । राधाकृष्ण देव गंगा मां की सेवा के वशीभूत होकर सभी सेवा को प्रत्यक्ष स्प से स्वीकार करते थे । श्रीजी महाराज जब नीलकंठ वर्णी के स्प में आये उस समय तीन दिन तक उपवास के बाद गंगा बाने ही भोजन कराया था । गंगा मां का यह नियम था कि अतिथि को भोजन कराने के बाद ही भोजन करना ।

श्रीहरि यह आग्रह रखते कि गंगा मां जब हमें बेटा कह कर बुलायेंगी तभी हम भोजन करेंगे । इस लिये गंगा मां श्रीहरि को बेटा कहकर ही बुलाती थी । श्रीहरि उन्हें मां कहकर बुलाते थे । जब प्रभु को इच्छा होती तब वे भोजन बनाकर खिला देती थी । श्रीहरि जहाँ जब जाते एक ही बात करते कि आप सभी को गंगा मां जैसा भोजन बनाने नहीं आता है ।

रामानंद स्वामी के अन्तर्ध्यान के बाद गंगा मां में श्री सहजानंद स्वामी के प्रति रामानंद स्वामी के शिष्य है यही भाव था । उनकी गद्दी पर बैठे हुये बाल ब्रह्मचारी का क्या प्रभाव पड़ेगा । ऐसा सदैव भाव रहता था ।

श्रीहरि गद्दी पर बैठने के बाद प्रथमबार जेतलपुर आये गंगा मां को समाचार मिला लेकिन उत्साह नहीं था । केवल औपचारिक स्वागत कर दीं । भगवान अन्तर्यामी इस रहस्य को जान गये । प्रभु की इच्छा से मुक्तानंद स्वामी की तरह रामानंद स्वामी ने गंगा मां को दर्शन देकर कहा कि सहजानन्द स्वामी सभी अवतारों के अवतारी हैं । मैं उद्धव हूँ । उन्हीं की आज्ञा से पहले भी आया था । दिव्यस्प में रामानंद स्वामी की वाणी सुनकर गंगा मां को बहुत पश्चाताप हुआ । सहजानंद स्वामी के लिये भगवत् भाव उत्पन्न हुआ । घर में आगर रामानंद स्वामी की गद्दी तकिया पर श्रीहरि को बैठाया । बाद में श्रीहरि के प्रति प्रेम बढने लगा श्रीहरि जब जेतलपुर आने में महीने से अधिक समय लगाते तो पुत्रवात्सल्य में बेहोश होजाती थी । इस लिये प्रेम वश होकर श्रीहरि अवार-नवार आते ही रहते थे ।

जेतलपुर में मंदिर करने की इच्छा से संतो द्वारा गंगा मां का घर गिरवा दिया । यह दृश्य देखकर गंगा मां संतो को तथा श्रीहरि को गाली देने लगीं । गाँव में बहुत सारे लोग श्रीहरि के द्वेषी थे । वे गंगा मां से कहने लगे कि चलो मां पुलिस केश कर देते हैं । यह सुनकर गंगा मां उन द्वेषियों को मारने के लिये पत्थर उठालीं । मेरे साधुओं को तथा मेरे भगवान को मैं जो चाहूँ करुँया कहूं तूं लोग कौन होता है । वे सभी सुनते ही वहाँ से भाग खड़े हुये ।

इस प्रसंग से यह स्पष्ट होता हैं कि गंगा मां संतो से तथा श्रीहरि से बहुत अधिक प्रेम करती थी । कवि, लेखक, कथाकार सभी गंगा मां के प्रेम को अपने शब्दों में नापना चाहे थे लेकिन पार नहीं जाये । जेतलपुर में सत्संग का खूब विस्तार गंगा मां ने किया था । श्रीजी महाराज जेतलपुर में जब-जब यज्ञ किये तब तब गंगा मां ही यज्ञ का भोजनालय सम्हालती थी । आज भी गंगा मां का गाँव में घर मोजूद है ।

●

स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी का जीवन प्रसंग

- कानाणी पुरीबहन भगवानभाई (खारवा)

एक दिन महाराज उदास होकर सभा में विराजमान थे, किसी से बोल नहीं रहे थे । इससे सभी काठी दरबार एवं संत परेशान हो गये थे । ब्रह्मानंद स्वामी तथा सुराखाचर दोनों हंसाने की बुहत कौशिष किये फिरभी महाराज हंसे नहीं । बाद में ब्रह्मानदं स्वामीने वैरागिनी साध्वी का स्मधारण करके वहाँ आये । महाराज के मुखारविंद को देखते हुये महिलाओं की तरफ आगे बढने लगे । ऐसी साध्वी को देखकर मोटीबा, जीवुबा, राजबा इत्यादि महिलायें खड़ी हो गई और कहने लगी यह कौन है ? कहाँ से आई है यह ठीक नहीं हैं ? यह सुनकर वहाँ से लौटकर संतो की सभा की तरफ आने लगे, उस समय संत भी खड़े हो गये और कहने लगे यह कौन है ? यहाँ से हटाओं अन्यथा उपवास करना पड़ेगा । ऐसी जोर जोर से आवाज चारो तरफ होने लगी । कभी वे महिलाओं की तरफ जाते तो कभी साधुओं की तरफ जाते दोनों तरफ खूब

जोर की आवाज होने लगी यह सुनकर श्रीहरि बड़े ध्यान से देखे तो ब्रह्मानंद स्वामी को पहचान गये और हंसते हुये कहने लेगे कि ठकुराईन अकेली क्यों हो ? तब स्वामी ने कहा कि ठाकुर नाराज हो गये हैं इस लिये यह सुनकर महाराज खूब आनंद के साथ हंसने लगे । बाद में अन्य सभी हंसने लगे । इस तरह का निजानंद स्म ब्रह्मानंद स्वामी थे ।

●

धोरवा कभी किसी का सगा नही होता

- गीताबहन लीलाधरभाई पित्रोडा (जोरावरनगर)

एक समय महादेवभाई बाहर जा रहे थे, उस समय रास्ते में एक वृद्धा को बेहोश अवस्था में देखे । बाद में उस वृद्धामां को धूप में से छाया में लाकर सुता दिये और पानी पिलाये । धीरे-धीरे हवा करने लगे । अब मांजी को थोड़ा आराम हुआ तो उठकर बैठ गई । और कहने लगी कि अरे भाई ? तूं तो बड़ा दयालु है, दूसरे के दु:ख में तूने रक्षा की है अत: तूं कुछ मुझ से मांगले । मेरे पास एक अंगुठी है, उस अंगुठी को पहनने से व्यक्ति सुखी होता है, जो मांगे वह मिले । लेकिन एकबार ही मांग सकते हो । इस अंगुठी के विषय में सुनकर महादेवभाई आनंदित हो गये । वे घर जाकर अंगुठी को रखकर अपने मित्र सोनी के पास गये और अंगुठी के विषय में बताये । सोनी के मन में लालच जगी वह सोचने लगा कि वह अंगुठी हमें किस तरह मिलेगी । सोनी बहाना करके महादेवभाई के घर गया और कहा कि मित्र तुम अपनी अंगुठी दे दो तो वैसी अंगुठी हम अपनी पत्नी के लिये बनवाकर दे देंगे । वह अंगुठी उस भोले मित्र से माँगकर घर ले गया और रात्रि में अंगुठी से कहा कि हे अंगुठी "मेरे घर में सुवर्ण की बरसात करो" यह सुनते ही इतना अधिक सुवर्ण की बरसात हुई कि उसी सुवर्ण के नीचे सोनी दबकर मर गया । बाद में महादेवभाई को इसका समाचार मिला वह सोनी के घर गया सोनी की यह दशा देखकर सोनी की पत्नी से कहने लगा कि कभी हराम की कमाई पर विश्वास नहीं करना चाहिये अब से उद्यम करके खायेंगे । इस तरह उद्यम करके महादेवभाई पैसेदार हो गये । खूब सुखी हो गये ।

इस तरह का छोटा दगा भी नाश का कारण बनता है । मेहनत से मिला हुआ धन सुखी बनाता है । मुफत का मिला धन दु:खी करता है । इस लिये मेहनत के विना महत्वाकांक्षा व्यर्थ कही जायेगी । यदि हम संत समागम करेंगे तो सद्गुणों का संस्कार आयेगा । संतो के आशीर्वाद से सबकुछ असंभव संभव हो जाता है । मन की शुद्धि होती है, आत्मा निर्मल हो जाता है । हराम की कभी इच्छा नहीं रखनी चाहिये ।

●

पूज्य भक्तिमाता

- श्री नरनारायणदेव युवती मंडल (लंडन यु.के.)

पूज्य भक्तिमाता अपने इष्टदेव सर्वोपरि घनश्याम महाराज की माताजी हैं । कोशलदेश (उत्तरप्रदेश) में मखोडाधाट में से उत्तर छपैया गाँव हैं । वही पर कार्तिक शुक्ल पूनम सं. १७२८ बुधवार को भक्तिमाता का जन्म हुआ था । श्री कृष्णा शर्मा तथा भवानी माता उनके माता-पिता थे ।

भक्तिमाता का जन्म होते ही वहाँ के लोगो में दैवीय विचार आने लगा था । उन लोगों को भजन भक्ति का रंग लग गया । अपने घरों में उत्सव करने लगे । भक्तिमाता के जन्मदिन से ही श्रीकृष्ण शर्मा के घर में नानाप्रकार की समृद्धि बढने लगी । भक्तिमाता सदा ईश्वरकी भक्ति में लीन रहती थी । छपैया वासियों की अहो भाग्य की ऐसी देवी प्राप्त किये, इससे वहाँ के लोग भक्ति कह कर पुकारते थे ।

भक्ति के विवाह का प्रस्ताव लेकर आये हुये प्रखर विद्वान भी भक्ति का नाम सुनते ही आश्चर्य चकित हो गये । गंगा जैसी पवित्र । कितना दिव्य तेज । ऐसे तेजोमय व्यक्तित्व को शतश: वंदन । बाद में श्रीकृष्ण शर्मा को ज्योतिषी ने बताया कि उनकी बेटी तो साक्षात् भक्ति की अवतार हैं । भक्ति के सामर्थ्य के आगे देवता भी झुक जायेंगे । भक्तिमाता का विवाह देव शर्मा (धर्मदेव) के साथ हुआ था । जो बाद में भक्तिमाता के साथ छपैया में रहे थे ।

वे अपने जीवन काल में अपने प्रथम पुत्र श्री रामप्रतापजी के जन्म के बाद, दोनो पति पत्नी असुरों के त्रास का खूब सामना किये थे । उन्हें छपैया से अयोध्या स्थलान्तर करना पड़ा था । इस तरह शांति की चाहना के कारण अपना घर छोड़ना पड़ा था । भक्तिमाता अपना परिवार बहुत ही संगठित रखी थी । वे हमेशा सबसे बड़े पुत्र रामप्रतापजी को तथा धर्मदेवजी को सबसे पहले भोजन कराती थी । भक्तिमाता अपने मन को केन्द्रित रखती थी । संयमित जीवन था । धैर्य की तो सागर थी । स्वयं पति की आज्ञा में रहती थी । भक्ति माता एक पवित्र एवं पतिव्रता नारी थी । नारी का व्यक्तित्व उनमें झलकता रहता था ।

जब श्री घनश्याम महाराज का जन्म काल था उस समय भक्तिमाता की शरीर आध्यात्मिक एवं दिव्य हो गयी थी । जीवन के सभी संघर्ष अदृश्य हो गये थे । धर्मदेव एवं भक्तिमाता पुन: छपैया वापस आगये । यहाँ आकर सुखी शांति मय जीवन जीने लगे । श्री घनश्याम महाराज का जन्म वि.सं. १८३७ चैत्र शुक्ल-९ (रामनवमी) के पवित्र दिन रात्रि में १०-१० मिनट पर हुआ था । छोटे बालक के मुख की आभामय तेजस्विता यह सूचित कर रही थी कि यह बालक स्वयं परमकृपालु परमात्मा है ।

एक दिन भक्तिमाता अपनी गोंद में लेकर छोटे घनश्याम महाराज को दूध पिला रही थी, उसी समय घनश्याम महाराज को जम्हाई आते मुख बिम्ब खुला और माताने उस मुख में सारे ब्रह्मांड को तथा चौदह भुवन को ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य के साथ सभी तारायण चन्द्रमां तथा सातो समुद्रो का दर्शन हुआ । भक्तिमाता के आनंद की सीमा न रही । आंखो मे से बहती आनंद की अश्रुधारा के साथ भक्तिमाता ने घनश्याम को अपनी गोद में जोर से दबा लिया और स्नेह की बरसात करने लगीं ।

प्रश्न पेटी

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ किस शास्त्र को न मानना तथा किस शास्त्र को न सुनना यह शिक्षापत्री के किस श्लोक में लिखा है ?

प्रश्न : २ स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी को यही भगवान है, इसकी प्रतीति प्रथम दर्शन में हो जाती है तथा इन रम्य क्षणो में व्याप्त धन्यता का भाव शब्द के रूप में बहने लगा । ब्रह्मानंद स्वामी तथा श्रीजी महाराज के प्रथम मिलन की धन्य घड़ी का वर्णन स्वामी के शीघ्र कवित्व शक्ति का परिचय किस कीर्तन में होता है ?

प्रश्न : ३ गधे से गाय बनाये, जिस मुख से गालियों की बरसात होती थी, उस मुख से अविरत प्रभु का नाम निकलने लगा । हाथ में तलवार के बदले माला फिरने लगी । ऐसे भक्त कौन थे ?

प्रश्न : ४ कृष्ण शर्मा की पत्नी को कितने पुत्र तथा कितनी पुत्रियां थीं ?

प्रश्न : ५ धर्मदेव बालप्रभु श्री घनश्याम का चौलकर्म कब, किस पक्ष में, किस नक्षत्र में तथा किस दिन करवाये थे ?

प्रश्न : ६ सर्व मंगल स्तोत्र में कितने श्लोक तथा कितने नाम है एवं ग्रंथ कर्ता कौन है ?

प्रश्न : ७ "मने स्वप्ने न गमे रे संसार कोने केम कीजिये रे" । यह उपदेशात्मक उक्ति किसने कही है ?

फरवरी २००९ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) तेजस्वत के पुत्र । (२) श्री नरनारायणदेव अपने भक्तों के लिये मुमुक्षुओं के लिये तप करते हैं । (३) श्रीजी महाराज चरण खींच लिये, पलथी मार लिये । (४) मुक्तानंद स्वामी । (५) अजो रबारी । (६) निष्कुलानंद स्वामी । (७) वैद्यराज हेमराज शाह ।

१. डाभी मफाजी सरदारजी - डांगरवा
२. सां. शिल्पाबा शितलबा - सुरेन्द्रनगर
३. कंचनबहन बाबूभाई पटेल - रतनपर
४. विनोदभाई पुंजाभाई पटेल - वहेलाल
५. वीणाबहन आर. भावसार - अहमदाबाद
६. अरविंदाबहन एन. भावसार - अहमदाबाद
७. सां. मंजूबा सां. भारतीबा - हवेली
८. अमृतलाल क. मोदी - सोजा
९. गोरधनभाई एस. पटेल - सोजा
१०. हसुबहन के. ठक्कर - इसनपुर
११. गंगाबहन भक्तिभाई पटेल - झुलासण
१२. गीताबहन प्रवीणभाई पटेल - राजपुर
१३. भक्तिभाई भोलाभाई पटेल - राणीप
१४. दक्षाबहन घनश्यामभाई सोनी - अहमदाबाद
१५. घनश्यामभाई भगवानजीभाई परमार - सुरत
१६. भावनाबहन कमलेशकुमार खंधडिया - मोरबी
१७. अमरशीभाई वी. विठ्ठलपरा - नवसारी
१८. स्वा. मं. हर्षद कोलोनी
१९. नीताबहन गुणवंतलाल सोनी - अहमदाबाद
२०. प्रफुलाबहन शरदभाई पटेल - अहमदाबाद
२१. माधवजीभाई हरखजीभाई आद्रोजा - मोरबी
२२. भानुबहन भगवानजीभाई परमार - बोडका
२३. शिल्पाबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव
२४. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव
२५. अंजनाबहन मनुभाई पटेल - दहेगाँव
२६. शारदाबहन कांतिभाई पटेल - नांदोल
२७. कैलाशबहन विष्णुभाई पटेल - नांदोल

नूतन प्रकाशन

सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवानने उत्तर गुजरात के अनेक गाँवो में अपने विचरण से पावन करके अनेकों लीला चरित्र किये थे । ऐसा ही एक पवित्र गाँव लांधणज में सात बार पधारकर प्रभुने जो जो लीलायें की उसका सुंदर वर्णन "लांधणज लीला" नामक ग्रंथ में ब्र. अविनाशानंदजीने किया है । १२९ वर्ष पहले इस ग्रंथ की रचना हुई थी।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प्रकाशित इस ग्रन्थ का विमोचन श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव के शुभ दिन पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से हुआ था । इस प्रसंग पर वडताल के पीठाधिपति पूज्य आचार्य महाराजश्री एवं पूज्य बड़े महाराजश्री तथा पू. लालजी महाराजश्री उपस्थित थे । यह प्रसंग बड़ा ही अलौकिक था।

भक्ति एवं उपासना की दृढता कराने वाली यह पुस्तक अपने अहमदाबाद मंदिर के साहित्य केन्द्र से तथा गांधीनगर सेक्टर-२३ के अपने मंदिर से मिल सकती है ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सोजा में दीप प्रागट्य

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा स.गु. स्वा. हरिचरणदासजी (कलोल) की प्रेरणा से एवं. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकादासजी (पी.पी. स्वामी) के मार्ग दर्शन से यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में अखंड दीप प्रागट्य श्री भीखाभाई कालीदास अमथाराम (यू.एस.ए.) पटेल के यजमानपद पर अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर, श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में वसंत पंचमी के दिन महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजीने दीप प्रगट करके ४०० जितने हरिभक्तों की पदयात्रा (सोजा गाँव तक) प्रस्थान कराकर प्रथम शुभ ज्योति की शुभ कामना के साथ आशीर्वाद दिया था । यह पदयात्रा अखंड दीप ज्योति के साथ जब सोजा गांव में पहुंची उस समय प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आरती उतारकर समस्त गाँव को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

इस प्रसंग पर समस्त गाँव की तरफ से धर्मकुल वंदना महोत्सव के लिये पांच लाख रुपये की सेवा की गई थी । महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु.स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट) नाना पी.पी. स्वामी तथा हरिचरणदासजी इत्यादि संत उपस्थित होकर प्रेरणास्रोत बने थे ।

- को. नारायणभाई पटेल

गवाडा गाँव में त्रिदिनात्मक ज्ञान यज्ञ पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से प्रसादी के गवाडा गाँव में अहमदाबाद के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट) तथा महंत छोटे पी.पी. स्वामीकी प्रेरणा से ता. ३०-१-२००९ से ता. १-२-०९ तक यहाँ के मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य को त्रिदिनात्मक पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा शा. स्वा. चैतन्यस्वरूपदासजी एवं अभयप्रकाशदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ता. १-२-०९ के दिन पधारे थे । ठाकुरजी की आरती उतारकर तथा पूर्णाहुति की आरती उताकर समस्त सभा को आशीर्वाद दिये थे । हरिभक्त देवदर्शन एवं आचार्यश्री का दर्शन कर के तथा कथामृतपान करके अंत में अन्नकूट का दर्शन करके महाप्रसाद लिये थे । इस प्रसंग पर स.गु. स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी तथा ब्र. पू. राजेश्वरानंदजी की सेवा प्रेरणास्रोत थी । *- नारायणभाई बी. पटेल*

विहार श्री स्वामिनारायणमंदिर (दोनो मंदिर) में द्वितीय पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, नारायणघाट के महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी एवं महंत शा.स्वा. पी.पी. स्वामी तथा स.गु. सूर्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १५-२-०९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का अभिषेक षोडशोपचार विधि से संपन्न हुआ । प्रासंगिक सभा में पाटोत्सव के यजमान श्री बहेचरदास पटेल परिवार के श्री गणेशभाई, श्री अमृतभाई, श्री शिवरामदास पटेल परिवार के श्री गणेशभाई, श्री अमृतभाई, श्री शिवरामभाई, श्री काशीरामभाई, तथा श्री विष्णुभाई इत्यादि लोगोने प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । संतो की प्रेरक वाणी के बाद समस्त सभा को पू. महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । सभी भक्तजन दर्शन कर के महाप्रसाद लेकर धन्य हो गये थे । इस प्रसंग पर बहनो को दर्शन देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवाला पधारी थी । *- को. जे.के. स्वामी*

भीमपुरा मंदिर में प्रथम पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नारायणघाट के महंत शा. स्वा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ४-२-०९ से, ८-२-०९ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण स.गु.शा. सूर्यप्रकाशदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ था । ता. ६-२-०९ के दिन प.पू. आचार्य महाराज पधारे थे । उस समय समस्त सभा को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । ता. ८-२-०९ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का पाटोत्सव तथा पारायण की पूर्णाहुति की आरती उतारी गई थी । प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी हरिकृषणदासजी तथा छोटे पी.पी. स्वामीने प्रेरक प्रवचन किया था । बाद में समस्त सभा को पू. महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

अ.नि. चौधरी दतसंगभाई विरसंगभाई तथा चेहरबहन दलसंगभाई की पुण्य स्मृति में उनके परिवार ने यजमान पद का लाभ लिया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन-आरती उतारकर हार्दिक आशीर्वाद प्राप्त किये

थे । इस प्रसंग में ब्र. पू. राजेश्वरानंदजी शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स.गु. स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी प्रेरणा स्रोत थे । *- डी.बी. चौधरी*

बाकरोल (बुझर्ग) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. आत्मप्रकाशदासजी तथा प.पू. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर का निर्माण होते ही मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. १५-२-०९ से ता. १७-२-०९ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण (अंश-१) का त्रिदिनात्मक पारायण तथा हरियाग का सुंदर आयोजन किया गया था । पारायण के वक्तापद पर युवान शा.स्वा. भक्तिनन्दनदासजी (गुरुपी.पी. स्वामी) ने कथामृत का पान कराया था । ता. १६-२-०९ के दिन ठाकुरजी की भव्य नगरयात्रा निकाली गई थी ।

ता. १७-२-०९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का भव्य स्वागत संत हरिभक्तों द्वारा किया गया था । बाद में प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से नूतन मंदिर में ठाकुरजी की मूर्ति प्रतिष्ठा बड़े धूमधाम से की गई थी । बाद में यज्ञ की पूर्णाहुति करके सभा में कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारे थे । इस महोत्सव के मुख्य यजमानश्री केशवलाल मगनलाल (बोस्टन) परिवारने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था ।

इस प्रसंग पर बहनों के आमंत्रण पर प.पू.अ.सौ. गादींवालाजी समस्त महिला मंडल को दर्शन् आशीर्वाद का लाभ देने हेतु पधारी थी । प्रासंगिक सभा में महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, .स.गु. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी, शा.स्वा. नौतमप्रकाशदासजी, पू. ब्र. राजेश्वरानंदजी, महंत गुस्रसादजी, विश्वप्रकाशदासजी, विश्वप्रकाश स्वामी, शा. व्रजवल्लभदासजी तथा कणभा गुरुकुल के संतोने प्रेरक प्रवचन किये थे । इस प्रसंग पर अहमदाबाद के संसद सभ्य हरिन पाठक पधारे थे । पू.पी.पी.स्वामी के मार्गदर्शन में जेतलपुरके महंत के.पी. स्वामी इत्यादि संतोने सुंदर आयोजन किया था । श्री गोरधनभाई पटेल की सेवा प्रेरणा स्रोत थी । जिसमें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

अंत में समस्त सभा को श्री नरनारायणदेव की महिमा तथा नियम, निश्चय तथा पक्ष को दृढता से रखने की आज्ञा करके प.पू. आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । हजारों भक्तजन धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री का चरण स्पर्श करके महाप्रसाद को ग्रहण कर धन्यता का अनुभव किये थे । *-महंत के.पी. स्वामी*

मोखासण में पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण

श्रीहरि के अलौकिक चरणों से अंकित मोखासण गाँव सदा सुखी है । श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी एवं छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से ता. ३-२-०९ से ता. ७-२-०९ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर संगीतमय सुमधुर वाणी में सम्पन्न हुई । जिसके यजमान पद का लाभ श्री त्रिभोवनदास किशोरदासकी सुपुत्री कु. लीलाबहन तथा सुपुत्र श्री सोमाभाई, श्री रामाभाई तथा श्री घनश्यामभाई आदि परिवारने लिये थे ।

ता. ७-२-०९ को प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । तथा भाईयों के मंदिर में ९ वाँ पाटोत्सव तथा बहनों के मंदिर में १८ वाँ पाटोत्सव की आरती अपने वरद् हाथों से उतारे थे । रात्रि का सांस्कृतिक प्रोग्राम बहुत सुंदर हुआ था । समग्र उत्सव में सभा संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरूपदासने किया था । इस उत्सव में धाम धाम से संत पधारे हुऐ थे । यजमान परिवार ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण हेतु तथा धर्मकुल वंदना महोत्सव हेतु गाँव की तरफ से बड़ी रकम एकत्रिक करके महाराजश्री को अर्पित की थी ।

- को. गोविंदभाई पटेल

धर्मकुल वंदना महोत्सव के उपलक्ष्य में वडु गाँव में पू. महाराजश्री का पदार्पण

यहाँ ता. २४-२-०९ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा संत पधारे थे । वडु गाँव के हरिभक्तोंने प.पू. महाराजश्री का दिव्य स्वागत किया था । बाद में प.पू. महाराजश्री ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुए थे । सभा में पू. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी आदि संतोने धर्मकुल वंदना महोत्सव से संबन्धित प्रवचन किया था । अंत में प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वचन दिया था । धर्मकुल वंदना महोत्सव के लिये यहाँ के गाँव वालो ने सेवा करके धर्मकुल की प्रसन्नता प्राप्त की थी । *- प्रवीण पटेल*

कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री नरनारायण युवक मंडल की सुंदर प्रेरक सभा आयोजित हुई थी । जिस में स.गु. शा. स्वा. निर्गुणदासजी तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने प्रेरक प्रवचन किया था । अंत में समस्त सभा को प.पू. महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

धनुर्मास में खिचड़ी महोत्सव

यहाँ के मंदिर में धनुर्मास में १३-१-०९ के दिन धुन प्रसंग सुबह में ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। तथा उन्हीं के हाथों से खिचड़ी-कढी का अलौकिक प्रसाद दिया गया था। सभी हरिभक्त पूज्य महाराजश्री के वरद् हाथों से प्रसाद ग्रहण करके भाव विभोर हो गये थे।

- पा. नरोत्तम भगत

हिंमतनगर में धनुर्मास धुन कथा

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर में प.पू. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से सम्पूर्ण धनुर्मास में सुन्दर धुन का आयोजन किया गया था। जप यज्ञ के साथ में महंत हरिजीवनदासजी ने शिक्षापत्री भाष्य की कथा पूरे महीने तक की थी। दिन प्रतिदिन सत्संगियों की संख्या में वृद्धि होती रही। सत्संगी खूब उदारभाव से धुनि कराने की भेंट एवं ठाकुरजीके प्रसादकी भेटं की सेवा किये थे।

पुजारी स्वामी अजयप्रकाशदासजी ठाकुरजी को प्रतिदिन अलग-अलग ढंग से अलंकृत करते थे तथा धर्मप्रियदासजी प्रसाद बनाने की सेवा करते थे।

- जसुभाई एस. पटेल, हिंमतनगर

राजपुर (कड़ी) नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्रीजी महाराज के चरणों से पावन राजपुर (कड़ी) गांव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन के अनुसार नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीहरि के मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव ता. ११-२-०९ से ता. १३-२-०९ तक धूमधाम के साथ मनाया गया था। इस महोत्सव के मुख्य मेहमान राजपुर के श्री कांतिलाल परसोत्तमदास पटेल थे। इसके अलांवा कोठारी श्री अमृतभाई पटेल ने नूतन मंदिर निर्माण कार्य में स्वयं कुशलता पूर्वक निरीक्षण करते रहे। ता. १३-२-०९ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री प्रातः ८-०० बजे राजपुर गाँव में पधारे थे। पू. महाराजश्री का भव्य स्वागत किया गया था। इस के बाद पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा एवं हरियाग की पूर्णाहुति की गई थी। इस प्रसंग पर सत्संगिभूषण कथा पारायण शा.स्वा. अभिषेकप्रसादासजी ने किया था। अहमदाबाद मंदिर के शा.स्वा. आनन्दजीवनदासजी इस कार्यक्रम में खूब सहयोग किये थे। कथा की पूर्णाहुति के बाद अहमदाबाद मंदिर के महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी ने राजपुर गाँव के सत्संग की स्मरेखा समझाई थी। इसके बाद समस्त हरिभक्तों ने पूज्य महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था। श्री चोक्सी नारायणभाई केशवलाल तथा पटेल रमणभाई केशवलाल एवं पटेल गांडालाल धनदास जैसे अनेक हरिभक्तोंने सेवा का लाभ लिया था। अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने राजपुर के हरिभक्त जो देश-विदेश में फैले हुये है, उन सभी के भावना की खूब प्रशंसा किये थे।

श्री स्वामिनारायण गुरुकुल कणभा-लक्ष्मी विवाह

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. ध्यानी स्वामी की प्रेरणा से कणभा स्वा. गुरुकुलमें ता. १-२-०९ रविवार को "लक्ष्मीविवाह" का महोत्सव धूमधाम से संपन्न किया गया था। इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. गादीवालाजी पधारी थी। सभी भक्तजन पूजन-दर्शन का लाभ लिये थे।

पू. ध्यानी स्वामी का स्वास्थ्य जल्दी अच्छा हो जाय तथा स्वस्थ होकर श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण कार्य की सेवा में सभी भक्तों को प्रेरणा दे, ऐसी प.पू. बड़े महाराजश्री तथा श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

इस प्रसंग पर ठाकुरजी के पक्ष के यजमान पद पर अहमदाबाद के श्री दर्शनभाई वसंतभाई महेता तथा माताजी के पक्ष के यजमान पद पर सिकंदराबाद के श्री अनिलभाई एच. पारेख परिवारने दिव्य लाभ लिया था। विशाल सत्संग समुदाय सत्संग का सुख लेकर विदा हुआ हुआ था।

- गोरधनभाई वी. सीतापरा

वक्तापुर (प्रांतिज देश)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से यहाँ के सभी हरिभक्तों ने धनुर्मास में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन ता. २५-१-२००९ को १५०० जितने गाँव के धर्मप्रेमी भक्तोंने शाकोत्सव मनाया था। गांव में श्री स्वामिनारायण भगवान की जयजयकार हो गई थी।

- को. केशाभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की शुभ भावना से तथा शा.स्वा. विश्वस्वरूपदास की प्रेरणा से तथा यहाँ के मंदिर में हरिभक्तों के सहयोग से सप्तकुंडी महा विष्णुयाग का आयोजन किया गया था। जिस की सम्पूर्ण विधि वेदपुत्र वासुदेव पुरोहित ने कराई थी। जिसके मुख्य यजमान नवीनचंद्र ओच्छवलाल तथा सह यजमान नरेन्द्रभाई बाबुलाल काछिया थे। प्रासंगिक सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

वसंत पंचमी के दिन ठाकुरजी का पंचामृत से अभिषेक

किया गया था । श्री शिक्षापत्री के श्लोको का पठन किया गया था । समग्र नगर में ठाकुरजी की शोभायात्रा निकाली गई थी । शाकोत्सव का भी आयोजन किया गया था । आगामी धर्मकुल वंदना महोत्सव में आर्थिक सहयोग की प्रेरणा दी गई थी । हरिभक्त बड़ी संख्या में उत्सव का लाभ लिये थे । *- रमेश भगत*

नवा वाडज

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री घनश्याम महाराज के सन्मुख ता. ८-१-०९ के दिन दिव्य शाकोत्सव किया गया था । जिसके मुख्य यजमान पद पर श्री अलकाबहन रजनीकांत पटेल तथा सहयजमान श्री कालीदासभाई जगजीवनभाई सोनी लाभ लिये थे । श्री शंभुभाईने सुंदर आयोजन किया था ।

- को. नवा वाडज

बालवा मंदिर में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

श्रीजी महाराज के प्रसादी के बालवा गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के महंत शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से श्री न.ना.देव यु. मंडल द्वारा अ.सौ. जोइतीबहन रामाभाई नाथुजी चौधरी तथा शांताबहन छगनभाई नाथुजी परिवार के यजमान पद पर स.गु.शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने कथामृत पान कराया था । कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव तथा रुक्मिणी विवाह धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर संप्रदाय के भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री जब पधारे उस समय उनके स्वागत में सूखा मेवा तथा चाकलेट इत्यादि का हार बनाकर बाल मंडल द्वारा स्वागत किया गया था । पू. लालजी महाराजश्रीने ठाकुरजी की आरती उतारकर कथा की पूर्णाहुति करके हरिभक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । हरिभक्त दर्शन का दिव्य लाभ लिये थे । *(श्री न.ना.यु.मं. बालवा)*

चाणस्मा मंदिर में १४ वाँ पाटोत्सव संपन्न

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. बड़े आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ता. १५-१-०९ के दिन ठाकुरजी का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । प.पू. बड़े महाराजश्रीने प्रथम मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में पधारे थे । जिस में पाटोत्सव के यजमान हरगोवनभाई ईश्वरदास पटेल परिवार प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारी गई थी । प्रासंगिक सभा में पूज्य पी.पी. स्वामी, शा. चन्द्रप्रकाशदासजी इत्यादि संतोने धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की महिमा तथा श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण की सुन्दर जानकारी दी थी । चाणस्मा गाँव के हरिभक्तोनें श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये एक लाख रुपये का चेक महाराजश्री को अर्पण किया था । अंत में सभी हरिभक्तों को पू. महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । इस प्रसंग पर अगल-बगल के गाँव के हरिभक्त आकर लाभ लिये थे । को. बाबूभाई पटेल इत्यादि लोग प्रेरणास्रोत बने थे । *- मोदी गोविंदभाई*

नवा वणझार मंदिर में पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वा. स्वयंप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में दशाब्दी पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ४-२-०९ से ता. ८-२-०९ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण एवं हरियाग शा.स्वा. रामकृष्णदाजी के वक्तापद पर संगीत के साथ संपन्न हुई ।

इस प्रसंग पर ता. ७-२-०९ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी तथा बहनों के मंदिर में पाटोत्सव तथा अन्नकूट की आरती उतारकर सभा में विराजमान सभी को हार्दिक आशीर्वाद दी थी ।

ता. ८-२-०९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी जब पधारी उस समय भव्य स्वागत का आयोजन किया गया था ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने मंदिर में ठाकुरजीकी आरती उतारकर कथा के पूर्णाहुति की आरती उतारकर सभा में संतो की प्रेरक वाणी के बाद सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । सभा का संचालन को. स्वा. कृष्णवल्लभदासने किया था । *- नारणजी तलाटी*

जेतलपुर श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज को थाल तथा संतो की रसोई अ.नि. बलदेवजी मोतीजी हिन्दुजी चौधरी के स्मरणार्थ बालवा ह. भरतभाई चौधरी

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

मूली मंदिर में वसंत पंचमी उत्सव तथा रंगोत्सव मनाया गया

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री राधाकृष्ण हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव अभिषेक माघशुक्ल-५ वसंत पंचमी के दिन प्रातः ६-३० बजे प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से षोडशोपचार पूर्वक धूमधाम से मनाया गया था । इस उत्सव में करीब चालिस हजार भक्त उपस्थित होकर दर्शन का लाभ लिये थे । वसंत पंचमी के इस शुभ अवसर पर स.गु. शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजीने अपनी मधुर वाणी में कथा का रसपान कराया था । यहाँ के महंत स्वा. नारायणप्रसादासजी, कोटेश्वर गुरुकुल के शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, स्वा. कृष्णवल्लभदासजी तथा जेतलपुर सं.पा. के हरिओं स्वामीने प्रसंगानुसार प्रवचन किया था । यजमान परिवारने प.पू.

आचार्य महाराजश्री का तथा प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये थे । दोपहर १२-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री संत-भक्तों के साथ रंग खेले थे । आज हरिभक्तों से पूरी मेदिनी भर गई थी । भक्तजन दिव्य दर्शन करके धन्य बन गये थे । महंत शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजीने सभा संचालन किया था । पू. महाराजश्री की आरती स्वामी जगतप्रकासदासजी, विष्णु स्वामी, चंदू भगत ने उतारी थी । *- शा. आत्मप्रकाशदास को. मूली*

सुरेन्द्रनगर मंदिर में भव्य शाकोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वा. प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में ता. १८-१-०९ रविवार के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । इस प्रसंग पर शा.स्वा. धर्मजीवनदासजीने कथामृतपान कराया था । प्रातः समूह महापूजा धामधूम से की गई थी, जिसमें २०० जितने हरिभक्त लाभ लिये थे । इस कार्यक्रम को मीडियावालोंने पेपर में प्रकाशित किया था । शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से श्री न.ना.यु.मंडल ने सम्पूर्ण व्यवस्था की थी । *- शैलेन्द्रसिंह झाला*

लींबडी मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का १९ वाँ पाटोत्सव अभिषेक अ.नि. अमृतलाल केशवलाल मोडेसरा परिवार की तरफ से संपन्न हुआ था । इस प्रसंग पर शाकोत्सव का भी आयोजन किया गया था । महंत स्वामीने श्रीजी महाराज तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था । सभी भक्तजन दर्शन करके तथा शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्य हो गये थे । *- साधु वंदनप्रकाशदास*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

श्री स्वामिनारायण मंदिर इटास्का शिकागो (I.S.S.O.)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से शिकागो मंदिर में संतो की देखरेख में सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है ।

तुलसी विवाह : १५ नवम्बर शनिवार के दिन मंदिर में तुलसी विवाह संपन्न हुआ था । जिस में श्री ठाकोरभाई तथा जयश्री बहन पटेल, श्री विनोदभाई लीलाबहन शाह, आशिषभाई नरेन्द्रभाई पटेल, रिन्कूबहन, श्री रणछोड़भाई पटेल जसीबहन परिवार यजमान बनकर अलौकिक लाभ लिये थे । पू. शा.स्वा. हरिप्रसाददासजी, पू. जे.पी स्वा. (अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वा. के शिष्य) तथा पूजारी स्वा. शांतिप्रकाशदासजी इस प्रसंग पर उपस्थित होकर शोभा बढाये थे । दिनेशभाई जोषीने तुलसी विवाह की विधि सुंदर ढंग से कराई थी । इस प्रसंग को देखकर आगामी वर्ष के कार्यक्रम के यजमान बन गये ।

मकर संक्रांति उत्तरायण पर्व

अपने मंदिर में मकर संक्रांति का उत्सव बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया था । पू. शा.स्वा. हरिप्रसाददासजी तथा पू. जे.पी. स्वामीने इस दिन दिये गये दान की महिमा बड़े सुंदर ढंग से समझाया था । ठाकुरजी के समक्ष पतंग तथा डोरी रखकर अलंकृत किया गया था, जिसका दर्शन करके सभी आनंदित हुये थे । सभा में दोनो संत खड़े होकर झोली मांगे थे । हरिभक्त झोली में गुप्तदान करके जीवन को सार्थक किये थे । आज के उत्सव के लिये बहुत सारे हरिभक्त यजमान बने थे । संतो की सेवा तथा प्रेरणा से हरिभक्तों को सेवा करने का बल मिलता है ।

ता. ७-२-०९ माघ शुक्ल-१३ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । पू.शा. स्वामीने शाकोत्सव का वर्णन अपनी सुमधुर शैलीमें किया था । स्वयं श्रीहरि साग बनावें तो उस प्रसाद को लेने के लिये कौन चूकेगा ? आज के दिन हरिभक्तों की इतनी संख्या बढ गई थी कि हाल में बैठने की जगह हीं नही थी । श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की कृपा से हरिभक्त प्रत्येक उत्सव में बड़ी संख्या में पधारते हैं । यहाँ के तीनो संत बड़ी श्रद्धा के साथ सेवा पूजा करके हरिभक्तों को महासुख प्रदान करते हैं ।

- वसंत त्रिवेदी, शिकागो

फलोरिडा (I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से फलोरिडा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी के समक्ष भव्य शाकोत्सव किया गया था । वसंत पंचमी के दिन शिक्षापत्री का पूजन अर्चन किया गया था । पुजारी शा.स्वा. विवेकसागरदासजीने वसंत पंचमी, शिक्षापत्री, शाकोत्सव की महिमा समझाई थी । यहाँ पर सत्संग की प्रवृत्ति अच्छी चल रही है । हरिभक्त ऐसे अलौकिक दर्शन करके जीवन को धन्य बनाते हैं । *- नलिनभाई पटेल*

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से धनुर्मास में धुन प्रातः ५-४५ से ६-२५ तक की गई थी । बाद में संतोने कथावार्ता का लाभ दिया था । उत्तरायण के दिन विशेष भजन का आयोजन

किया गया था । एकादशी के दिन अखंड धुन हुई थी । ७ फरवरी को दिव्य शाकोत्सव मनाया गया था । महंत स्वामीने शाकोत्सव की महिमा समझाई थी । वसंत पंचमी के दिन शिक्षापत्री का पूजन अर्चन किया गया था ।

प.पू. ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग सुंदर चल रहा है । *- प्रवीणभाई शाह*

वोशिंग्टन डी.सी. (I.S.S.O. चेप्टर)

यहाँ १७ जनवरी, ०९ रविवार की सायंकाल ४-३० से ८-३० तक स्कोवल चर्च के पेरीस होल में इल्करीडझ मेरीलेन्ड में सत्संग सभा हुई थी । जिसमें ठाकुरजी के समक्ष धुन-भजन तथा वचनामृत की कथा एवं ह्युस्टन से के.पी. स्वामीने सेल फोन पर कथा का लाभ दिया था । नित्य, नियम ठाकुरजीकी थाल, आरती समूह में की गई थी । ३१ मीं जनवरी वसंत पंचमी के दिन सायंकाल ५-१५ से ९-१५ तक श्री डिम्पलभाई कनुभाई पटेल के घर सत्संग सभा हुई थी । जिस में सर्व प्रथम शिक्षापत्री का पूजन-अर्चन किया गया था । इसके बाद वचनामृत की कथा, नित्य नियम तथा समूह में आरती की गई थी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग की प्रवृत्ति अच्छी चल रही है ।

- कनुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर क्लेक टाउन सीडनी में श्रीमद् भागवत सप्ताह
(ता. ५-४-०९ से ता. ११-४-०९)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर क्लेकटाउन सीडनी, ओस्ट्रेलिया में ता. ५-४-०९ से ११-४-०९ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का भव्य आयोजन किया गया है । जिसके वक्ता पू. भागवताचार्य योगेन्द्र भट्ट विराजमान होंगे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी अध्यक्षता में सम्पूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न होगा ।

आस्ट्रेलिया में रहने वाले सभी भक्तों को लाभ लेने के लिये आमंत्रण है ।

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अहमदाबाद : श्रीमती शाताबहन पूनमभाई पटेल (नारवाली) ता. ३१-१२-०८ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई है ।

मकाखाड : श्री भीखाभाई मोहनभाई चौधरी (संचालक- श्री न.ना.देव यु.मंडल) ता. ३-१-०९ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

बालवा : श्री चौधरी जेसंगभाई वरवाभाई ता. १-१-०९ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

खारवा (मूलीदेश) : श्री त्रिकमभाई भीखाभाई पटेल के सुपुत्र चि. हरेशकुमार ता. १५-१२-०८ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

विसनगर : श्री जयेशभाई दर्जी (श्री न.ना.देव यु.मं. के सभ्य) के पिता श्री हसमुखभाई शंकरलाल दर्जी ता. २०-१-०९ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

कांकरिया : श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभ्य श्री गोपालभाई रतिलाल पटेल ता. ८-१-०९ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

अहमदाबाद : श्री कांतिलाल मोहनलाल पटेल कीधर्म पत्नी अ.सौ. रुक्मिणीबहन ता. २८-१-०९ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई हैं ।

बडोदरा : श्री अ.नि. भालजा साहब के भतीजा श्री हर्षदभाई जेठालाल शाह की धर्म पत्नी अ.सौ. निर्मलाबहन ता. ३-२-०९ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई हैं ।

अहमदाबाद (एप्रोच-बापुनगर) : श्री हरिभाई टपूभाई चौहाण (उ. ५७ वर्ष) ता. ३०-१-०९ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

मेंदरडा : श्री भरतभाई भूलाभाई राठोड (उ. १८ वर्ष) श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

कालियाणा : श्री मधुबहन कमाभाई बुटिया ता. १९-२-०९ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई हैं ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।



प्रभा हनुमानजी जमीयतपुरा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थित में कथामृतपानकराते हुए शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी ।



श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय जेतलपुर के अपने विद्यार्थी संत, उत्तर तथा दक्षिण पीठ के दोनों आचार्य महाराजश्री एवं. प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में अहमदाबाद के टाउन होल में सांस्कृतिक प्रोग्राम करते हुए ।



कांकरिया मंदिर में धनुर्मास में खीचड़ी उत्सव करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में कांक रिया के महंत स्वामी ।



श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव प्रसंग पर तीनों महाराजश्री द्वारा आरती दर्शन का लाभ लेते हुए यजमानश्री ।



सोजा मंदिर में अखंड ज्योत को खुल्ला करते हुए प.पू. महाराजश्री ।



बालासिनोर मंदिर में यज्ञ विधि कराते हुए प.पू.ध.धु. आचार्यमहाराजश्री ।



मली मंदिर में वसंत पंचमी के यजमानश्री



Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011



महोल श्री घनश्याम महाराज का कलरकाम की
करने वाले अ.नि. केशवलाल अमीचन्ददास
न परिवार मोखासण, श्री विष्णुभाई, अ.सौ
चन्द्रिकाबहन एवं नि. मेनक ।



सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव प्रसंग पर विशाल सभा में दर्शन देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू. राकेशप्रसादजी महाराजश्री (वडताल) प.पू. लालजी महाराजश्री एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

प.पू.ध.धु.आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीની આજ્ઞાથી



श्री नरनारायण देव

प.पू. आदि आचार्य
श्री अयोध्याप्रसादजी
महाराज श्री
जन्म द्विशताब्दी
महोत्सव

धर्मकुळ वंदना महोत्सव



प.पू. आदि आचार्य
श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री



તા. ૧ થી ૩ જૂન ૨૦૦૯ જેઠ સુદ ૯ થી ૧૧ સુધી

સ્થળ:- ગણેશ હાઉસીંગ કોર્પો.લી., સરખેજ-ગાંધીનગર રોડ,
થલતેજ ચોકડીથી સોલા બ્રીજ વચ્ચે, થલતેજ, અમદાવાદ



-:આયોજક:-
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧

Prafull Kharsani